Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 8

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

25 जमादी सानी 1441 हिजरी कमरी 20 तब्लीग़ 1399 हिजरी शमसी 20 फरवरी 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अख़लाक़ से मुराद ख़ुदा तआला की रज़ा (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की व्यावहारिक ज़िन्दगी में साक्षात नज़र आती है) को प्राप्त करना है। इसलिए ज़रूरी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िदन्गी के तर्ज़ के अनुसार अपनी ज़िन्दगी बनाने की कोशिश करे। ये अख़लाक़ बतौर बुनियाद के हैं। अगर वो कमज़ोर रहे तो इस पर इमारत नहीं बना सकते। अख़लाक़ एक ईंट पर दूसरी ईंट का रखना है। अगर एक ईंट टेढ़ी हो तो सारी दीवार टेढ़ी ही रहती है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

माँगना इन्सान का गुण है और स्वीकार करना अल्लाह तआला का

माँगना इन्सान का गुण है और स्वीकार करना अल्लाह तआला का। जो नहीं समझता और नहीं मानता, वह झूटा है। बच्चा का उदाहरण जो मैंने वर्णन किया है वह दुआ की फ़िलासफ़ी ख़ूब हल कर के दिखाती है। रहमानियत और रहीमीत दो नहीं हैं। अत: जो एक को छोड़कर दूसरी को चाहता है उसे मिल नहीं सकता। रहमानियत की मांग यही है कि वह हम में रहीमीत से फ़ैज़ उठाने की शक्ति पैदा करे। जो ऐसा नहीं करता वह नेअमत का इन्कार करता है। اِيَّاكَ نَعۡبُدُ के यही अर्थ हैं कि हम तेरी इबादत करते हैं इन ज़ाहिरी सामानों और माध्यमों की रियाइत से जो तूने प्रदान किए हैं। देखो यह ज़बान जो रगों और पट्ठों से पैदा की है अगर ऐसा ना होता तो हम बोल ना सकते। ऐसी ज़बान दुआ के लिए प्रदान की जो दिल के विचारों तक को प्रकट कर सके। अगर हम दुआ का काम ज़बान से कभी ना लें तो ये हमारी बद किस्मती है। बहुत सी बीमारीयां ऐसी हैं कि अगर वह ज़बान को लग जाएं तो एक बार ही ज़बान अपना काम छोड़ बैठती है। यहां तक कि इन्सान गूँगा हो जाता है। अत: यह कैसी रहीमीत है कि हमको ज़बान दे रखी है। ऐसा ही कानों की बनावट में फ़र्क़ आ जाए तो कुछ भी सुनाई ना दे। ऐसा ही दिल का हाल है। वह जो विनय तथा विनम्रता की हालत रखती है और सोचने और तफ़क्कुर की शक्तियां रखी हैं अगर बीमारी आ जाए तो वह सब लगभग बेकार हो जाती हैं। पागलों को देखो कि उनकी शक्तियां कैसे बेकार हो जाती हैं। तो अत: क्या यह हमको अनिवार्य नहीं कि इन ख़ुदा तआला द्वारा दी गई नेअमतों की क़दर करें ? अगर इन क़ुव्वतों को जो अल्लाह तआला ने अपने कमाल फ़ज़ल से हमको प्रदान किए हैं बेकार छोड़ दें तो निसन्देह हम नेमत का इन्कार करने वाले हैं। अत: याद रखो कि अगर अपनी कुव्वतों और ताक़तों को बेकार छोड़कर दुआ करते हैं तो यह दुआ कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकती क्योंकि जब हमने पहले अतीया ही से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे को कब अपने लिए मुफ़ीद और लाभदायक बना सकेंगे।

सच्ची बसीरत मांगने की हिदायत

अत: اِيَّاكَ نَعۡبُدُ यह बता रहा है कि हे रब्बुल आलमीन ! तेरे पहले अतिया को भी हमने बेकार और बर्बाद नहीं किया।

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ में यह हिदायत फ़रमाई है कि इन्सान ख़ुदा तआला से सच्ची बसीरत मांगे। क्योंकि अगर उस का फ़ज़ल और करम हाथ न पकड़े ना करे तो आजिज़ इन्सान ऐसे अन्धेरे और अंधकार में फंसा हुआ है कि वह दुआ ही नहीं कर सकता। अत: जब तक इन्सान ख़ुदा के इस फ़ज़ल को जो रहमानियत के फ़ैज़ान से उसे पहुंचा है काम में ला कर दुआ ना मांगे कोई नतीजा बेहतर नहीं निकाल सकता।

मैंने बहुत समय हुआ अंग्रेज़ी क़ानून में यह देखा था कि तक़ावी के लिए पहले कुछ सामान दिखाना ज़रूरी होता है। इसी तरह से क़ानून क़ुदरत की तरफ़ देखो कि जो कुछ हमको पहले मिला है इस से क्या बनाया? अगर अक़ल होश ,आँख, कान रखते हुए नहीं बहके हो और अज्ञानता और दीवानगी की तरफ़ नहीं गए तो दुआ करो और भी इलाही फ़ैज़ मिलेगा, वर्ना महरूमी और बदक़िस्मती के लच्छन हैं।

हिक्मत के अर्थ

कई बार हमारे दोस्तों को ईसाइयों से सम्पर्क पड़ेगा। वे देखेंगे कि कोई भी बात नादानों में ऐसी नहीं जो हकीम ख़ुदा की तरफ़ सम्बन्धित हो सके। हिक्मत के अर्थ क्या हैं ? وَضۡعُ الشَّیۡءِ فِیۡ مَحَلِّہٖ मगर उनमें देखोगे कि कोई कर्म और हुक्म भी इस के अनुसार नज़र नहीं आता। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ पर जब हम पर ग़ौर नज़र करते हैं तो कुरआन का आयत से स्पष्ट तौर पर पता लगता है कि बज़ाहिर तो इस से दुआ करने का हुक्म मालूम होता है कि صِرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ की हिदायत मांगने की शिक्षा है लेकिन اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ उस के सिर पर बतला रहा है कि इस से लाभ उठाएं अर्थात सीधा रास्ते की मन्ज़िलों के लिए सलीम ताकतों से काम लेकर इलाही मदद को माँगना चाहिए।

अख़लाक़ से क्या अभिप्राय है

अब सोचना चाहिए कि वे कौन सी बातें हैं जो मांगनी चाहिएं। प्रथम अख़लाक़ जो इन्सान को इन्सान बनाता है। अख़लाक़ से कोई सिर्फ़ नर्मी करना ही मुराद ना ले ले। ख़ल्क़ और ख़ुलक़ दो शब्द हैं जो विपरीत अर्थों पर दलालत करते हैं। ख़ल्क़ ज़ाहरी रूप से पैदाइश का नाम है। जैसे कान , नाक यहां तक कि बाल इत्यादि भी सब ख़ल्क़ में शामिल हैं और ख़ुलक़ बातनी (भीतरी) पैदाइश का नाम है। ऐसे ही बातिनी ताकत जो इन्सान और ग़ैर इन्सान में अन्तर हैं वे सब ख़ुलक़ में दाख़िल हैं। यहां तक कि अक़ल फ़िक्र इत्यादि समस्त क़ुव्वतें ख़ुलक़ ही में शामिल हैं।

ख़ुलक़ से इन्सान अपनी इन्सानियत को दुरुस्त करता है। अगर इन्सानों के फ़राइज़ ना हों तो मानना पड़ेगा कि आदमी है ? गधा है? या क्या है? जब ख़ुलक़ में अन्तर आ जाए तो सूरत ही रहती है। जैसे अक़ल ख़राब हो जाए तो मजनूं कहलाता है सिर्फ ज़ाहिरी सूरत से ही इन्सान कहलाता है। अत: अख़लाक़ से मुराद ख़ुदा तआला की रज़ा (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की व्यावहारिक ज़िन्दगी में साक्षात नज़र आती है) को प्राप्त करना है। इसलिए ज़रूरी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िदन्गी के तर्ज़ के अनुसार अपनी ज़िन्दगी बनाने की कोशिश करे। ये अख़लाक़ बतौर बुनियाद के हैं। अगर वो कमज़ोर रहे तो इस पर इमारत नहीं बना सकते। अख़लाक़ एक ईंट पर दूसरी ईंट का रखना है। अगर एक ईंट टेढ़ी हो तो सारी दीवार टेढ़ी ही रहती है। किसी ने क्या अच्छा कहा है

ख़िश्त अव्वल चूँ नहिद मुअम्मार कज
ता सुरय्या मै रवद दीवार कज

इन बातों को बहुत तवज्जा से सुनना चाहिए। अक्सर आदमियों को मैंने देखा

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-3)

जमाअत बहुत अमल वाली और उग्रवाद के बिलकुल ख़िलाफ़ है

जमाअत अहमदिया दुनिया की समस्त समस्याएँ चाहे वह इमीग्रेशन हो या न्यूक्लियर जंगें या आर्थिक समस्याएँ सब का हल पेश करती है। ख़लीफ़ा साहिब निहायत सादा तबीयत के मालिक हैं और अन्य दुनियावी लीडरों के विपरीत हैं जो अपने आपको बाक़ी दुनिया से ऊपर समझते हैं।

हमें ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात का बेचैनी से इंतज़ार था क्योंकि यह लम्हे बहुत क़ीमती होते हैं,ख़लीफ़ा की आवाज़ और मुस्कुराहट निहायत ख़ूबसूरत और बहुत प्रभावित करने वाली है।

जलसा सालाना निहायत मुफ़ीद प्रोग्राम है क्योंकि इस में वर्तमान युग की समस्याओं के हल के बारे में तक़रीरें की जाती हैं। दुनिया में अमन फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और जो लोग ईमान से दूर हो जाते हैं उनको ईमान के क़रीब करने के बारे में शिक्षा दी जाती है।

लेथोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात और मेहमानों की ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

हमेशा याद रखें कि आपका इल्म, आपकी अक़्ल, आपकी रोशन दिमाग़ी सब बेफ़ाइदा अगर आप अल्लाह तआला की बातों को नहीं समझतीं या समझने की कोशिश नहीं करतीं या सुनकर,समझ कर, फिर इस पर अनुकरण करने की नहीं करतीं।

यह बात हर अहमदी मर्द और औरत और लड़के और लड़की को अपने सामने रखनी चाहिए कि इस्लाम जो कामिल और मुकम्मल शरीयत है जिसमें मर्द और औरत हर एक के अधिकार और कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों की वज़ाहत कर दी गई है और उन पर अनुकरण कर के हमने अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त करनी है उसे हमने अपनी ज़िन्दगियों पर लागू करना है।

और ग़ैर मज़हबी लोगों या दुनियादार लोगों से प्रभावित नहीं होना और ना सिर्फ प्रभावित नहीं होना बल्कि उनको मज़हब की हक़ीक़त बतानी है उनको ख़ुदा तआला के क़रीब लाना है।

ज़ंग को दूर करने और अंधेरों को मिटाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ एक ख़ास कोशिश से क़दम बढ़ाने की ज़रूरत है

अगर औरत अपने ज़िम्मा काम को सरअंजाम दे रही है और मर्द अपने ज़िम्मा काम और कर्तव्य को सरअंजाम दे रहा है और दोनों अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और ख़शीयत और इस की रज़ा प्राप्त करने के लिए काम कर रहे हैं तो उन की इस दुनिया की ज़िन्दगी भी पाकीज़ा होगी और अल्लाह तआला के हुक्म पर चलते हुए उस की रज़ा को प्राप्त करने वाली होगी।

जलसा सालाना जर्मनी के अवसर पर दिनांक 6 जुलाई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का औरतों से ख़िताब।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

(5 जुलाई 2019 दिनांक जुम्अः) (बाक़ी रिपोर्ट)

लेथोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

लेथोनिया से Laurynas Valatka (लाव रेन्स वालातका) साहिब ने कहा कि जलसा में शामिल होने के बाद इस्लाम के बारे में मेरी राय 180 के कोण पर तबदील हुई है। जमाअत बहुत अमल वाली और उग्रवाद के बिलकुल ख़िलाफ़ है। जमाअत अहमदिया दुनिया के समस्त समस्याएँ चाहे वह इमीग्रेशन हो या न्यूक्लियर जंगें या आर्थिक समस्याएँ सब का हल पेश करती है। ख़लीफ़ा साहिब निहायत सादा तबीयत के मालिक हैं और अन्य दुनियावी लीडरों के विपरीत हैं जो अपने आपको बाक़ी दुनिया से ऊपर समझते हैं। आप निहायत शफ़ीक़, मुहब्बत करने वाले और बहुत अच्छी मज़ाक का हिस्स रखने वाले हैं इस बात ने मुझे बहुत हैरान किया।

लेथोनिया से Rima Povileniene (रीमा पोवेली अने) साहिबा ने कहा: जलसा में शामिल होने से इस्लाम की शिक्षाओं के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। इस्लाम और जमाअत के परिचय और तारीख़ पर आधारित नुमाइश बहुत ही लाभदायक है। जलसा का मुनज़्ज़म निज़ाम हैरान करने वाले प्रभावित करता है। हमारी लेथोवानियल अहमदी दोस्त Aukse Ahmed बहुत मुहब्बत करने वाली औरत हैं जिन्होंने जलसा के दौरान हर चीज़ का परिचय हमें पेश किया। समस्त काम करने वाले बहुत मुहब्बत करने वाले और बर्दाश्त का माद्दा रखने वाले हैं। हुज़ूर से मुलाक़ात के दौरान बहुत सुकून और अमन प्राप्त हुआ और आपके जवाबों से बहुत प्रभावित हूँ।

लेथोनिया से Stanislava Ligeikiene (स्तानस लावालीगई) की अन्य साहिबा ने कहा कि मुसलमानों से मेरा सम्बन्ध 1970 ई से है। जमाअत की इतनी बड़ी संख्या का एक जगह एक मक़सद के लिए इकट्ठा होना और निहायत उत्तम तरीके से इतनी बड़ी संख्या का नमाज़ अदा करना और दुआएं करना बहुत प्रभावित करता है। हुज़ूर का इस सवाल कि अपनी रूह को कैसे पाक किया जाए ? का जवाब बहुत अच्छा लगा कि रूह को पाक करने के लिए अल्लाह तआला से दुआ करें, इस से बख़्शिश मांगा करें और इस से प्यार करें वे आप से प्यार करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया रूह को पवित्र करने के लिए इस्लाम का अपना दृष्टिकोण है। ईसाईयत का अपना दृष्टिकोण है। ख़ुदा तआला से दुआ करनी चाहिए कि वह हमें हमेशा सही रास्ता पर चलाए। गुनाहों से पाक करे। फिर उस पाकीज़गी पर क़ायम रखने की तौफ़ीक़ दे। यह एहसास पैदा हो कि मेरे हर काम को ख़ुदा तआला देख रहा है। अगर यह एहसास हो जाएगा कि ख़ुदा मेरे हर काम को देख रहा है तो फिर इन्सान वही काम करेगा जो ठीक होगा और सही होगा

लेथोनिया से एक मियां बीवी Zilvinas Juzulenas और Jurgita Juzuleniene (ज़लू युनुस यूज़ विलयनस) साहिब और योर गीता यूज़ वलियाने साहिबा जलसा में शरीक हुए। ये अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमें जलसा में शामिल हो कर बहुत ख़ुशी है। हम अपनी दो साल की बच्ची के साथ आए हैं। छोटी बच्ची के साथ सफ़र करना मुश्किल था लेकिन जलसा के माहौल और ख़लीफ़ा साहिब की मुहब्बत हमें यहां खींच लाई। जलसा के दौरान सब्र और बर्दाश्त का स्तर बहुत बुलंद था। लोग बहुत ख़ुश आचरण वाले थे।

वह बताते हैं: हमें ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात का बेचैनी से इंतज़ार था क्योंकि ये लम्हे बहुत क़ीमती होते हैं। बहुत यादगार लम्हे हैं। ख़लीफ़ा की आवाज़ और मुस्कुराहट निहायत ख़ूबसूरत और बहुत प्रभावित करने वाला है। हमने अपनी माता और बेटी के लिए दुआ की दरख़ास्त भी की। ख़लीफ़ा साहिब की दुआएं हमारे लिए बहुत क़ीमती हैं। हम शुक्रिया अदा करते हैं कि आप मुहब्बत, सब्र और नेक

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जो धर्म खुल्फा प्रस्तुत करें वह ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त में होता है।

ख़िलाफ़त एक ऐसी चीज़ है जिससे जुदाई किसी इज़्ज़त का अधिकारी इन्सान को नहीं बना सकती।

ख़लीफ़ा की इताअत इसलिए ...की जाती है कि वह इलाही वह्य के लागू करने और समस्त निज़ाम का मर्कज़ है

हर हाल में हर शख़्स के लिए समय के ख़लीफ़ की इताअत फ़र्ज़ होगी।

यह कह देना कि कोई आदमी बावजूद बैअत न करने के इस स्थान पर रह सकता है जिस स्थान पर बैअत करने वाला हो

वास्तव में यह ज़ाहिर करता है कि ऐसा शख़्स समझता ही नहीं कि बैअत और निज़ाम क्या चीज़ है।

यह ख़्याल कि ख़िलाफ़त की बैअत के बिना भी इन्सान इस्लामी निज़ाम में अपने स्थान को क़ायम रख सकता है।

घटनाओं और इस्लामी शिक्षा के बिलकुल ख़िलाफ़ है और जो शख़्स इस किस्म के विचार अपने दिल में रखता है मैं नहीं समझ सकता कि वह बैअत का मफ़हूम कुछ भी समझता हो?

वक्त के ख़लीफ़ की बैअत, ख़िलाफ़त का मुक़ाम और ख़िलाफ़त की इताअत के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो के उपदेशों की रोशनी में बसीरत वाला वर्णन

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी हज़रत साद बिन उबादा रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन। सिलसिला के पुराने सेवक मुकर्रम सय्यद मुहम्मद सरवर शाह साहिब, मैम्बर सदर अन्जुमन अहमदिया कादियान और आधी सदी तक सिलसिला की ख़िदमतें करने वाली मुहतरमा शौकत गौहर साहिबा की वफ़ात,मरहूमीन का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत साद बिन उबादह रज़ि का ज़िक्र पिछले कुछ ख़ुत्बों से चल रहा है। आज में इसका आख़िरी हिस्सा वर्णन करूँगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अन्सार अपने में से जिन को ख़लीफ़ा चुनना ना चाहते थे उनमें उनका नाम भी खासतौर पर लिया जाता है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने भी सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में लिखा है कि अन्सार का उनको ख़लीफ़ा चुनने पर ज़ोर था और यह क़ौम के सरदार भी थे और जब हज़रत अबू बकर रज़ि ख़लीफ़ा चुने किए गए तो यह उस वक़्त बल्कि इस से पहले ही अन्सार के कहने पर कुछ दुविधा में भी पड़ गए थे कि उनको होना चाहिए। इस हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने बड़े विस्तार से रोशनी डाली है और ख़िलाफ़त के मुक़ाम के महत्व को भी इस हवाले से वर्णन किया है। इसलिए मैं इस वर्णन को बड़ा ज़रूरी समझता हूँ। वक़्त की बड़ी ज़रूरत है। मुस्लेह मौऊद रज़ि के इस हवाले से पहले हदीस और एक तारीख़ी उद्धरण भी पेश करूँगा।

हुमैद बिन अब्दुर्र रहमान कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ि मदीना मुनव्वरा के देहात में थे। जब वह आए तो उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे से कपड़ा हटा कर आप के मुबारक चेहरा को चूमा और फ़रमाया मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान! आप ज़िन्दा होने और देहान्त प्राप्त होने की हालत में किस क़दर पाकीज़ा थे। फिर कहा कि काबा का रब्ब की क़सम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम देहान्त पा चुके हैं। इस के बाद हज़रत अबूबकर और हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हुमा तेज़ी के साथ सक़ीफ़ा बनू साअदा की तरफ़ रवाना हुए। ये दोनों वहां पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने गुफ़्तगु शुरू की। आप ने कुरआन करीम में अन्सार के बारे में जो कुछ नाज़िल हुआ इस में से कुछ न छोड़ा और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्सार की फ़ज़ीलत के बारे में जो कुछ फ़रमाया था वह सब बयान किया। फिर आपने फ़रमाया तुम लोगों को इल्म है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि अगर लोग एक वादी में चलें और अन्सार दूसरी वादी में तो मैं अन्सार की वादी में चलूँगा। फिर हज़रत सअद रज़ि को मुख़ातिब कर के हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया कि सअद! तुझे इल्म है कि तो बैठा हुआ था जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त के हक़दार क़ुरैश होंगे। लोगों में से जो नेक होंगे वे क़ुरैश के नेक अफ़राद के अधीन होंगे और जो फ़ाजिर होंगे वे क़ुरैश के फ़ाजिरों के अधीन होंगे। हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि आप ने सच कहा। हम वज़ीर हैं और आप लोग उमरा हैं। यह मसनद अहमद बिन हंबल की हदीस है।

(मस्नद अहमद बिन भाग 01 पृष्ठ 158-159 मस्नद अबी बकर सिद्दीक़ हदीस 18 प्रकाशन दारुल हदीस काहिरा 1994 ई)

तबक़ातुल कुबरा में इस अवसर की तफ़सील में इस तरह लिखा है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत साद बिन अबादह रज़ि की तरफ़ पैग़ाम भिजवाया कि वह आकर बैअत करें क्योंकि लोगों ने बैअत कर ली है और तुम्हारी क़ौम ने भी बैअत कर ली है। इस पर उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम मैं इस वक़्त तक बैअत नहीं करूँगा जब तक में अपने तरकश में मौजूद सारे तीर लोगों को न मार लूं अर्थात उन के खतन के अनुसार उन्होंने इनकार किया, और वे लोग जो मेरी क़ौम तथा क़बीला में से मेरे अधीन हैं उनके हमराह तुम लोगों से लड़ाई न कर लूं। हज़रत अबू बकर रज़ि को जब यह ख़बर प्राप्त हुई तो बशीर बिन सअद रज़ि ने कहा कि हे ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्होंने इन्कार किया है और इसरार किया अर्थात इनकार करने पर इसरार कर रहे हैं। वह आप की बैअत करने वाले नहीं चाहे उन्हें क़त्ल कर दिया

जाए। और वह हरगिज़ क़तल नहीं किए जा सकते जब तक कि उनके साथ उनकी औलाद और उनके क़बीले को क़त्ल ना किया जाए। और ये लोग हरगिज़ क़तल नहीं किए जा सकते जब तक कि क़बीला ख़ज़रज को क़तल ना किया जाए। और ख़ज़रज को हरगिज़ क़तल नहीं किया जा सकता जब तक कि औस को क़तल ना किया जाए। लिहाज़ा आप उनकी तरफ़ पेशक़दमी ना करें जबकि अब लोगों के लिए मामला सीधा हो चुका है। वह आपको नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता अर्थात उनकी क़ौम में से अक्सरीयत ने बैअत कर ली है। अगर इनकार किया है तो कोई बात नहीं क्योंकि वह एक ऐसा अकेला शख़्स है जिसे छोड़ दिया गया है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बशीर रज़ि की नसीहत को क़बूल करते हुए हज़रत सअद रज़ि को छोड़ दिया।

फिर जब हज़रत उमर रज़ि ख़लीफ़ा बने तो एक दिन मदीना के रास्ते पर सअद रज़ि से मिले तो आप ने फ़रमाया। कहो हे सअद। सअद रज़ि ने कहा कहो हे उमर रज़ि। यह आपस में बात हो रही है। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि तुम वैसे ही हो जैसे पहले थे? सअद रज़ि ने कहा हाँ मैं वैसा ही हूँ। ख़िलाफ़त आप को मिल गई है। ठीक है कि ख़िलाफ़त तो मिल गई है आप को। बहुत सारे लोगों ने बैअत भी कर ली है लेकिन मैंने अभी तक नहीं की। फिर उन्होंने कहा कि ख़ुदा की कसम आप का साथी अर्थात हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हमें आप की निसबत ज़्यादा महबूब था। यह हज़रत उमर रज़ि को हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि हज़रत अबू बकर रज़ि हमें आप की निसबत ज़्यादा महबूब थे। फिर हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि ख़ुदा की कसम मैंने इस हालत में सुबह की है कि मैं आप की हम-साएगी को पसन्द नहीं करता। हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने फ़रमाया कि जो अपने पड़ोसी की मुसाहिबत को नापसंद करता है तो वह फिर उस के पास से दूर चला जाए। हज़रत सअद रज़ि ने कहा मैं यह भूलने वाला नहीं अर्थात मैं यह करूँगा। मैं ऐसी पड़ोसी की तरफ़ मुंतक़िल होने वाला हूँ जो उन के ख़्याल में आप से बेहतर है। कुछ समय नहीं गुज़रा था कि हज़रत सअद रज़ि ने हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की ख़िलाफ़त के आरम्भ में शाम देश की तरफ हिज्रत की। तबक़ातुल कुबरा का यह उद्धरण है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग3,सअद बिन अबादह, पृष्ठ 312 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान1996 ई)

हज़रत सअद रज़ि के बारे में यह भी ज़िक्र मिलता है कि उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत कर ली थी। अत: तारीख़ तिबरी में लिखा है कि

وَاتَّبَعَ الْقَوْمُ عَلَى الْبَيْعَةِ،وَبَايَعَ سَعْدٌ

कि सारी क़ौम ने बारी बारी हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत की और हज़रत सअद रज़ि ने भी बैअत की। यह तारीख तिबरी का हवाला है।(तारीख़ तिबरी भाग 3 पृष्ठ 266 सन अहदा अशर ज़िक्र अलख़बर अमाजर बैयनल महाजरीन, दारुल फ़िक्र बेरूत 2002)

बहरहाल जैसा कि मैं ने कहा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जो विस्तार वर्णन फ़रमाया है इस में बहुत से पहलू बयान हो जाते हैं। ख़िलाफ़त की बैअत भी क्यों ज़रूरी है, ख़िलाफ़त का मुक़ाम किया है और हज़रत सअद ने जो कुछ क्या उस की क्या हैसियत है।

आप अपने एक ख़ुत्बा में वर्णन फ़रमाते हैं कि''क़तल के अर्थत सम्बन्ध विच्छेद के भी होते हैं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जब सहाबा में ख़िलाफ़त के बारे में मतभेद पैदा हुआ। अन्सार का ख़्याल था कि ख़िलाफ़त हमारा हक़ है, हम शहर वाले हैं । कम से कम अगर एक मुहाजिरीन में से ख़लीफ़ा हो तो एक अन्सार में से हो।''अर्थात दो दो हों।''बनू हाशिम ने ख़्याल किया कि ख़िलाफ़त हमारा हक़ है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे ख़ानदान से थे। और मुहाजिरीन यद्यिप यह चाहते थे कि ख़लीफ़ा क़ुरैश से होना चाहिए क्योंकि अरब लोग सिवाए क़ुरैश के किसी की बात मानने वाले न थे मगर वह किसी ख़ास शख़्स को पेश न करते थे बल्कि निर्धारण को च्यन पर छोड़ना चाहते थे' कि इंतिख़ाब कर लेते हैं।''मुस्लमान जिसे चुने कर लें वही ख़ुदा तआला की तरफ़ से ख़लीफ़ा समझा जाएगा। जब उन्होंने इस ख़्याल का इज़हार किया तो अन्सार और बनू हाशिम सब उनसे सहमत हो गए मगर एक सहाबी की समझ में यह बात न आई। यह वह अन्सारी सहाबी थे जिन्हें अन्सार अपने में से ख़लीफ़ा बनाना चाहते थे इसलिए शायद उन्होंने इस बात को अपना अपमान समझा या यह बात ही उनकी समझ में न आई' जो भी वजह थी''और उन्होंने कह दिया कि मैं अबू बकर रज़ि की बैअत के लिए तैयार नहीं हूँ। हज़रत उमर रज़ि का इस अवसर के बारे में एक कथन कुछ तारीख़ों में आता है कि आप ने फ़रमाया।اُقْتُلُوْا سَعْدًا अर्थात सअद को क़तल कर दो लेकिन न उन्होंने ख़ुद उनको क़तल किया ना किसी और ने। कुछ माहिर ज़बान लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ि की मुराद सिर्फ ये थी कि सअद रज़ि से सम्बन्ध विच्छेद कर लो। कुछ तारीख़ों में यह भी लिखा है कि हज़रत सअद रज़ि बाक़ायदा मस्जिद में आते और अलग नमाज़ पढ़ कर चले जाते थे और कोई सहाबी उनसे कलाम ना करता था। अत: क़तल की ताबीर सम्बन्ध विच्छेद और क़ौम से जुदा होना भी होती है।'

(ख़ुत्बात महमूद भाग16 पृष्ठ 81-82 ख़ुत्बा जुमा 1 फरवरी1935 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो सअद बिन अबादह रज़ि के घटना की और अधिक विस्तार वर्णन फ़रमाते हैं और यह पहला उद्धरण जो मैं ने पढ़ा है इस ख़ुत्बे के हवाले से आप फ़रमाते हैं कि मैंने पहले एक ख़ुत्बे में एक अन्सारी सहाबी का ज़िक्र किया था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद कुछ अन्सार की तहरीक थी कि अन्सार में से ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए लेकिन जब मुहाजरीन ने और विशेश रूप से हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने सहाबा को बताया कि इस किस्म का इंतिख़ाब कभी भी मिल्लत इस्लामीया के लिए लाभदायत नहीं हो सकता और यह कि मुस्लमान कभी इस इंतिख़ाब पर राज़ी नहीं होंगे अर्थात अन्सार को चुनने पर तो फिर अन्सार और मुहाजिर इस बात पर जमा हुए, इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुए कि वे किसी मुहाजिर के हाथ पर बैअत कर लें और आख़िर हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की ज़ात पर इन सब का इत्तिफ़ाक़ हुआ। अन्सार पर तो इत्तिफ़ाक़ नहीं हो सकता था। हज़रत अबू बकर रज़ि ने वज़ाहत फ़रमाई और कुछ और सहाबा ने वज़ाहत फ़रमाई कि क्योंकि यह मुफ़ीद नहीं होगा। बहरहाल यह फ़ैसला हुआ कि मुहाजिरीन में से ख़लीफ़ा हो और फिर हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की ज़ात पर इन सब का इत्तिफ़ाक़ हुआ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि मैंने इस वक़्त बताया था कि इस वक़्त जब सअद रज़ि ने बैअत से देरी की थी, थोड़ा सा तंगी अनुभव करते थे तो हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने कहा था कि-اُقْتُلُوْا سَعْدًا अर्थात सअद को क़तल कर दो मगर न तो उन्होंने सअद रज़ि को क़तल किया और न किसी और सहाबी ने बल्कि वह हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे। हज़रत सअद रज़ि हज़रत उमर रज़ि की ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे जैसा कि पहले उद्धरण वर्णन हो चुका है और हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की ख़िलाफ़त में शाम में फ़ौत हुए। उन्होंने हिज्रत कर ली थी और शाम में फ़ौत हुए जिससे उम्मत के इमामों ने इस्तिदलाल किया है कि क़तल के अर्थ यहां जिस्मानी क़तल नहीं बल्कि सम्बन्ध विच्छेद के हैं और अरबी ज़बान में क़तल के कई अर्थ होते हैं। उर्दू में बेशक क़तल के अर्थत जिस्मानी क़तल के ही होते हैं लेकिन अरबी भाषा में जब क़त्ल का शब्द इस्तिमाल किया जाए तो वह कई अर्थों में प्रयोग होता है जिनमें से एक अर्थत सम्बन्ध विच्छेद के हैं और कोष वालों ने इस्तिदलाल किया है कि हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो का अभिप्राय क़तल से क़तल नहीं बल्कि सम्बन्ध विच्छेद था, उनको छोड़ दिया जाए, उनसे बातचीत बन्द कर दी जाए वर्ना अगर क़तल से मुराद ज़ाहिरी तौर पर क़तल कर देना था तो हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जो बहुत जोशीले थे उन्हें ख़ुद क्यों न क़तल कर दिया या सहाबा रज़ि में से किसी ने क्यों उन्हें क़तल ना किया मगर जबकि हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने न सिर्फ उन्हें उस वक़्त क़त्ल न किया बल्कि अपनी ख़िलाफ़त के ज़माना में भी क़तल ना किया और कुछ के निकट तो वह हज़रत उमर रज़ि की ख़िलाफ़त के बाद भी ज़िन्दा रहे और किसी सहाबी ने उन पर हाथ ना उठाया तो बहरहाल इस से ज़ाहिर होता है कि क़तल से अभिप्राय सम्बन्ध विच्छेद ही था। ज़ाहिरी तौर पर क़तल करना नहीं था और यद्यपि वह सहाबी आम सहाबा से अलग रहे। हज़रत सअद रज़ि उनसे अलग हो गए लेकिन किसी ने उन पर हाथ नहीं उठाया।

अत: हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि मैं ने उदाहरण दिया था कि रोया में भी अगर किसी के बारे में क़तल होना देखा जाए तो इस का अर्थ सम्बन्ध विचेछाद और बाईकॉट भी हो सकती है। अपने एक ख़ुत्बा का ज़िक्र कर रहे हैं। बहरहाल आगे फ़रमाते हैं कि मुझ से एक दोस्त ने बयान किया है कि एक शख़्स ने इस ख़ुत्बे के बाद कहा कि सअद रज़ि ने यद्यपि बैअत नहीं की थी लेकिन मश्वरों में उन्हें ज़रूर शामिल किया जाता था अर्तात बैअत न होने के बावजूद भी हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो उन्हें मश्वरों में शामिल करते थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं इस शख़्स ने जो बात की है हज़रत सअद रज़ि के बारे में उस के दो अर्थ

हो सकते हैं कि या तो मेरे मफ़हूम को रद्द करना है अर्थात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि कोष से क़तल की जो परिभाषा वर्णन कर रहे हैं या तो वह मेरे मफ़हूम को रद कर रहा है या यह कि अर्थात कि ऐई कोई घटना नहीं हुई या यह कि ख़िलाफ़त की बैअत न करना कोई इतना बड़ा जुर्म नहीं है। दूसरी बात यह शख़्स यही साबित करना चाहता है कि अगर ख़िलाफ़त की बैअत न की जाए तो कोई बड़ा जुर्म नहीं है क्योंकि सअद रज़ि ने यद्यपि बैअत नहीं की थी मगर मश्वरों में शामिल हुआ करते थे। आप फ़रमाते हैं किसी शायर ने कहा है कि

ता मर्ग सुख़न नगुफ़तह बाशद
ऐब व हुनरश न हुफ़तह बाशद

इन्सान के ऐब तथा हुनर उस की बात करने तक पोशीदा होते हैं। जब इन्सान बात कर देता है तो कई बार अपने दोष ज़ाहिर कर देता है। ख़ामोश हो तो ऐब छिपे रहते हैं। कई बार बेवक़ूफ़ों वाली बातें कर देता है तो ऐब ज़ाहिर हो जाते हैं। आप कहते हैं कि इस शख़्स ने जिसने यह तारीफ़ की थी कि हज़रत सअद रज़ि मश्वरे में शामिल होते थे या हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के ख़ुत्बा पर विशलेषण किया था , इस शख़्स का बात करना भी यही अर्थ रखता है कि या तो वह ख़िलाफ़त की बैअत को हलका करना चाहता है या अपने इलम का इज़हार करना चाहता है लेकिन यह दोनों बातें ग़लत हैं। इल्म के इज़हार का कोई फ़ायदा नहीं हो सकता क्योंकि यह बात उतनी ही ग़लत है कि हर अक़लमंद उस को सुनकर सिवाए मुस्कुरा देने के और कुछ नहीं कर सकता। सहाबा के हालात के बारे में इस्लामी तारीख़ में तीन किताबें बहुत मशहूर हैं और सारी तारीख़ जो सहाबा से बारे में है उन्हीं किताबों में चक्कर खाती है और वे किताबें ये हैं कि तहज़ीबुत्तहज़ाब, इसाबा और उसुदुल ग़ाब। इन तीनों में से हर एक में यही लिखा है कि सअद बाक़ी सहाबा से अलग हो के शाम में चले गए और वहीं फ़ौत हुए और कुछ कोष की किताबों ने भी क़तल के शब्द पर बेहस करते हुए इस घटना का वर्णन किया है। आप फ़रमाते हैं कि बात यह है कि सहाबा में से साठ, सत्तर के नाम सअद हैं। इन्ही में से एक सअद बिन अबी वकास रज़ि भी हैं जो अशरा मुबशरा में से थे। हज़रत उमर रज़ि की तरफ़ से कमांडर इन चीफ़ मुक़र्रर थे और समस्त मश्वरों में शामिल होते थे। मालूम होता है कि जिस आदमी ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के ख़ुत्बे पर यह एतराज़ किया था उसने कम इलम से सअद का शब्द सुनकर यह न समझा कि यह सअद और है और वह सअद और, बल्कि झट मेरे ख़ुत्बे पर तबसरा कर दिया। यह मैंने सअद बिन अबी वकास रज़ि का ज़िक्र ना किया था जो मुहाजिर थे बल्कि मैंने जिसका ज़िक्र क्या वह अन्सारी थे। इन दो के इलावा और भी बहुत से सअद हैं बल्कि साठ, सत्तर के क़रीब सअद हैं। जिस सअद के बारे में मैंने ज़िक्र किया उनका नाम सअद बिन अबादह रज़ि था। अरब के लोगों में नाम दरअसल बहुत कम होते थे और आम तौर पर एक एक गांव में एक नाम के कई कई आदमी हुआ करते थे। जब किसी का ज़िक्र करना होता तो उसके बाप के नाम से इस का ज़िक्र करते जैसे सिर्फ़ सअद या सईद नहीं कहते थे बल्कि सअद बिन उबादह रज़ि या सअद बिन अबी वकास रज़ि कहते। फिर जहां बाप के नाम से शनाख़्त न हो सकती वहां उनके मुक़ाम का ज़िक्र करते, जहां मुक़ाम के ज़िक्र से भी शनाख़्त ना हो सकती वहां उस के क़बीला का ज़िक्र करते। अत: एक सअद के बारे में तारीख़ों में बड़ी बेहस आई है क्योंकि नाम उनका दूसरों से मिलता-जुलता था इसलिए मुअर्रिख़ीन उनका ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि जैसे हमारी मुराद औस के सईद से है या जैसे ख़ज़रजी सईद से है। यह एतराज़ करने वाले साहिब जो हैं या तबसरा करने वाले इन साहिब ने मालूम होता है कि नामों के मतभेद को नहीं समझा और यूंही एतराज़ कर दिया मगर ऐसी बातें इन्सानी इलम को बढ़ाने वाली नहीं होतीं बल्कि जहालत का पर्दा फ़ाश करने वाली होती हैं।

फिर आप फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़त एक ऐसी चीज़ है जिससे जुदाई किसी इज़्ज़त का मुस्तहिक़ इन्सान को नहीं बना सकती। आप फ़रमाते हैं कि ईसी मस्जिद में जहां आप ख़ुत्बा दे रहे थे शायद मस्जिद अकसा है कि मैंने हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि से सुना, आप फ़रमाते थे कि तुमको मालूम है कि पहले ख़लीफ़ा का दुश्मन कौन था? फिर ख़ुद ही इस सवाल का जवाब देते हुए हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि ने फ़रमाया कि क़ुरआन पढ़ो तुम्हें मालूम होगा कि इस का दुश्मन इब्लीस था। अर्थात आदम को अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ा बनाया तो इस का दुश्मन इब्लीस था। इस के बाद आप ने फ़रमाया अर्थात हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि ने फ़रमाया कि मैं भी ख़लीफ़ा हूँ और जो मेरा दुश्मन है वह भी इब्लीस है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि इस में कोई शक नहीं कि ख़लीफ़ा मामूर नहीं होता, यद्यपि यह ज़रूरी भी नहीं कि वह मामूर न हो। हज़रत आदम मामूर भी थे और ख़लीफ़ा भी थे। हज़रत दाऊद मामूर भी थे और ख़लीफ़ा भी थे। और इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मामूर भी थे और ख़लीफ़ा भी थे। फिर अन्य अंबिया मामूर भी होते हैं और ख़ुदा के बनाए गए ख़लीफ़ा भी । जिस तरह हर इन्सान एक तौर पर ख़लीफ़ा है इसी तरह अंबिया भी ख़लीफ़ा होते हैं मगर एक वह खलिफ़ा होते हैं जो कभी मामूर नहीं होते। यद्यपि इताअत के लिहाज़ से उनमें और अंबिया में कोई फ़र्क़ नहीं होता। इताअत जिस तरह नबी की ज़रूरी होती है वैसे ही खलिफ़ा की भी ज़रूरी होती है। हाँ इन दोनों इताअतों में एक अन्तर और फ़र्क़ होता है और वह यह कि नबी की इताअत और फ़रमांबर्दारी इस कारण से की जाती है कि वह अल्लाह तआला की वह्य और पाकीज़गी का मर्कज़ होता है मगर ख़लीफ़ा की इताअत इसलिए नहीं की जाती कि वह अल्लाह तआला और तमाम पाकीज़गी का मर्कज़ है बल्कि इसलिए की जाती है कि वह अल्लाह तआला की वह्य की तनफ़ीज़ और तमाम निज़ाम का मर्कज़ है यानी जो वही नबी पे उत्तरी है इस की तनफ़ीज़ करने वाला है। और जो निज़ाम नबी ने क़ायम किया है इस को चलाने का मर्कज़ है ख़लीफ़ा। इसी लिए वाक़िफ़ और इलम वाले लोग कहा करते हैं कि अंबिया को अस्मत कुबरा हासिल होती है और खलिफ़ा को अस्मत सुग़रा। इसी मस्जिद में (जहां कादियान में मुस्लेह मौऊद रज़ि ख़ुत्बा फ़र्मा रहे हैं कि इसी में) इसी मिंबर पर जुम्अ: के ही दिन हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल से मैंने सुना। आप फ़रमाते थे कि तुम मेरे किसी ज़ाती कर्म में दोष निकाल कर इस इताअत से बाहर नहीं हो सकते। अगर मेरा कोई ज़ाती काम है इस में कोई दोष निकाल लो तो इस का यह मतलब नहीं कि तुम इताअत से बाहर हो गए। कभी नहीं हो सकते जो ख़ुदा ने तुम पर फर्ज़ की है। वह इताअत जो ख़ुदा ने तुम पर फर्ज़ की है तुम इस से बाहर नहीं हो सकते क्योंकि जिस काम के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ वह और है और वह निज़ाम का इत्तिहाद है। इसलिए मेरी फ़रमांबर्दारी ज़रूरी और लाज़िमी है। तो अंबिया के बारे में जहां अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि सिवाए मानवीय कमज़ोरियों के जिसमें तौहीद और रिसालत में अन्तर ज़ाहिर करने के लिए अल्लाह तआला दख़ल नहीं देता और इसलिए भी कि वह उम्मत की तर्बीयत के लिए ज़रूरी होती है जैसे सज्दा सहू कि वह भूल के नतीजे में होता है मगर उस की एक ग़रज़ उम्मत को सहू के आदेशों की व्यावहारिक शिक्षा देना थी। ऐसी ग़लती नबी भी कर सकते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी हुई और सजदा सहू भी आप ने फिर अदा फ़रमाया। फ़रमाया कि अंबिया के समस्त कर्म ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त में होते हैं और वहां खलिफ़ा के बारे में ख़ुदा तआला की यह सुन्नत है, अंबिया के लिए तो हो गया कि समस्त कर्म ख़ुदा की हिफ़ाज़त में हैं लेकिन खलिफ़ा के बारे में अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि इन के वे समस्त कर्म ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त में होंगे जो निज़ाम सिलसिला की तरक़्क़ी के लिए उनसे होंगे और कभी भी वे कोई ऐसी ग़लती नहीं करेंगे और अगर करें तो इस पर क़ायम नहीं रहेंगे जो जमाअत में ख़राबी पैदा करने वाली और इस्लाम की फ़तह को इस की शिकस्त में बदल देने वाली हो। वह जो काम भी निज़ाम की मज़बूती अर्थात वक्त के ख़लीफ़ जो काम भी निज़ाम की मज़बूती और इस्लाम के कमाल के लिए करेंगे ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त उस के साथ होगी और अगर वह कभी ग़लती भी करें तो ख़ुदा उनका सुधार का ख़ुद ज़िम्मेदार होगा मानो निज़ाम के बारे में खलिफ़ा के कर्मों के ज़िम्मेदार खलिफ़ा नहीं बल्कि ख़ुदा है। इसलिए कहा जाता है कि अल्लाह तआला खलिफ़ा ख़ुद क़ायम किया करता है। इस का यह अर्थ नहीं कि वे ग़लती नहीं कर सकते अर्थात खलिफ़ा ग़लती नहीं कर सकते बल्कि मतलब यह है कि या तो उन्ही की ज़बान से या कर्म से ख़ुदा तआला इस ग़लती का सुधार करा देगा या अगर उनकी ज़बान या कर्म से ग़लती का सुदार ना कराए तो इस ग़लती के बुरी नतीजों को बदल डालेगा अर्थात उस के नतीजे फिर बुरे नहीं निकलेंगे।

फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला की हिक्मत चाहे कि खलिफ़ा कभी कोई ऐसी बात कर बैठें जिसके नतीजे बज़ाहिर मुस्लमानों के लिए बुरे हूँ और जिसकी वजह से ज़ाहिर में जमाअत के बारे में ख़तरा हो कि वह बजाय तरक़्क़ी करने के पतन की तरफ़ जाएगी तो अल्लाह तआला निहायत छुपे हुए सामानों से इस ग़लती के नतीजों को बदल देगा और जमाअत बजाय पतन के तरक़्क़ी की तरफ़ क़दम बढ़ाएगी और वे छुपी हुई हिक्मत भी पूरी हो जाएगी जिसके लिए ख़लीफ़ा के दिल में ज़हूल पैदा किया गया था अर्थात कोई भूल हो गई थी या ग़फ़लत हो गई थी, वह हिक्मत पूरी हो जाएगी। मगर अंबिया को यह दोनों बातें हासिल होती हैं अर्थात इस्मते कुबरा भी और इस्मत सुग़रा भी। वह तनफ़ीज़ तथा निज़ाम का भी मर्कज़ होते हैं और वह्य तथा कर्मो की पाकीज़ का भी मर्कज़ होते हैं। मगर उस का यह

मतलब नहीं कि हर ख़लीफ़ा के बारे में ज़रूरी है कि वह पाकीज़गी कर्मों का मर्कज़ न हो। हाँ यह हो सकता है , मुम्किन है कि कर्मों की पाकीज़गी से सम्बन्ध रखने वाले कुछ कर्मों में वे दूसरे औलिया से कम हो। अत: जहां ऐसे खलि़फ़ा हो सकते हैं जो कर्मों की पाकीज़गी का मर्कज़ हों और निज़ाम सिलसिला का मर्कज़ भी, वहां ऐसे खलि़फ़ा भी हो सकते हैं जो पाकीज़गी और विलायत में दूसरों से कम हों लेकिन इंतिज़ामी योग्यता, निज़ामी क़ाबिलियतों के लिहाज़ से दूसरों से बढ़े हुए हूँ मगर हरहाल में हर शख़्स के लिए उनकी इताअत फ़र्ज़ होगी चूँकि निज़ाम का एक हद तक जमाअत की सियासत के साथ सम्बन्ध होता है

अब जमाती सियासत से लोग एक दम चौंक गए होंगे। कई एक को ख़्याल आया होगा कि यह जमाअत की सियासत क्या हुई? यहां लफ़्ज़ ''सियासत''से मुराद उमूमी तौर पर हमारी ज़बान में, ज़बान में किया? हमारे हाँ आम तौर पर जो अभिप्राय लिया जाता है वह नकारात्मक रंग में लिया जाता है और नकारात्मक रंग में ही इस्तिमाल होता है। कुछ सियासतदानों ने इस शब्द को बदनाम कर दिया है कि जोड़ तोड़ करना और नुक़्सान पहुंचाना या सही काम ना करना लेकिन हक़ीक़त में इस का जो कोष में अर्थ है इस से मुराद यह है कि निज़ाम चलाने का तरीक़। सही रंग में निज़ाम चलाना उस को सियासत कहते हैं। फिर हिकमत अमली से काम करना यह है इस का अर्थ। बुराईयों को रोकने के लिए निज़ाम को क़ायम करना यह है इस का अर्थ। अक़्ल और हिक्मत से काम को चलाना। क़ोमों के मध्य के मामलों को सही रंग में अदा करने की सलाहीयत होना यह असल सियासत है। मानो समस्त सकारात्मक बातें इस शब्द का मतलब हैं लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि बदक़िस्मती से हम वास्तमविक अर्थों को भूल कर सियासतदानों के कर्मों की वजह से और अपनी ही ग़लत हरकतों की वजह से नकारात्मक अर्थ लेते हैं लेकिन बहरहाल यहां हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने जो यह शब्द सियासत प्रयोग किया है वह सकारात्मक रंग में प्रयोग किया है और वह सारी वे बातें हैं जो मैंने वर्णन की हैं । इस का मतलब यह है कि निज़ाम को चलाने के लिए जो अक़्ल और हिक्मत और दानाई और सलाहीयतें होनी चाहिऐं।

फ़रमाया कि चूँकि निज़ाम का एक हद तक जमाअत की सियासत के साथ सम्बन्ध होता है इसलिए खलि़फ़ा के बारे में ग़ालिब पहलू यह देखा जाता है कि वह निज़ामी पहलू को बरतर रखने वाले हूँ। निज़ामी पहलू को सबसे ऊपर रखें। यद्यिप साथ ही अर्थात यहां आप ने इस बात की वज़ाहत भी कर दी। यद्यिप साथ ही यह भी ज़रूरी है कि धर्म की दृढ़ता और इस के मफ़हूम के क़ियाम को भी समक्ष रखें, निज़ाम जमाअत चलाना भी फ़र्ज़ है वक्त के ख़लीफ़ का और साथ ही उनके लिए धर्म के इस्तिहकाम और इस के क़ियाम को भी सामने रखना ज़रूरी है। इसलिए ख़ुदा तआला ने कुरआन मजीद में जहां ख़िलाफ़त का ज़िक्र किया वहां बताया है कि

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ

ख़ुदा उनके धर्म को मज़बूत करेगा और उसे दुनिया पर ग़ालिब करेगा

अत: जो धर्म खलि़फ़ा पेश करें वह ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त में होता है मगर यह हिफ़ाज़त सुग़रा होती है। आप फ़रमाते हैं कि किस भाग में वे ग़लती कर सकते हैं और खलि़फ़ा का आपस में मतभेद भी हो सकता है मगर वे निहायत छोटी चीज़ें, मामूली चीज़ें होती हैं जैसे कुछ मसलों के बारे में हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो में मतभेद रहा बल्कि आज भी उम्मत मुहम्मदिया उन मसलों के बारे में एक अक़ीदा इख़तियार नहीं कर सकी मगर यह मतभेद सिर्फ़ किसी भाग में होता है। मूल बातों में उनमें कभी मतभेद नहीं होगा बल्कि इस के विपरीत उनमें भी इत्तिहाद होगा कि वे अर्थात खलि़फ़ा दुनिया के हादी और रहनुमा और उसे रोशनी पहुंचाने वाले होंगे। अत: यह कह देना कि कोई शख़्स बावजूद बैअत न करने के इस मुक़ाम पर रह सकता है जिस मुक़ाम पर बैअत करने वाला हो दरहक़ीक़त यह प्रकट करता है कि ऐसा शख़्स समझता ही नहीं कि बैअत और निज़ाम क्या है।

मश्वरा के बारे में भी यह याद रखना चाहिए कि एक एक्सपर्ट और माहिर फन चाहे वे ग़ैर मज़हब का हो इस से मश्वरा ले लिया जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मुक़द्दमे में एक अंग्रेज़ वकील किया मगर उस का मतलब यह नहीं था कि आप ने उमूरे नबुव्वत में इस से मश्वरा लिया। जंग एहज़ाब हुई तो उस वक़्त रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से मश्वरा लिया और फ़रमाया कि तुम्हारे मुल्क में जंग के मौके़ पर क्या-किया जाता है? उन्होंने बताया कि हमारे मुल्क में तो ख़ंदक़ खोद ली जाती है। आप ने फ़रमाया यह बहुत अच्छा मशवरा है। अत: ख़ंदक़ खोदी गई और इसी लिए उसे जंग ख़ंदक़ भी कहा जाता है मगर बावजूद उस के हम नहीं कह सकते कि सलमान फ़ारसी रज़ि फ़ुनून जंग में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा माहिर थे। उन्हें फ़ुनून जंग में महारत का वह मुक़ाम कहाँ हासिल था जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हासिल था या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो काम किए वे कब हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि ने किए बल्कि ख़िलाफा के ज़माने में भी उन्हें यानी हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि को किसी फ़ौज का कमांडर इन चीफ़ नहीं बनाया गया हालाँकि उन्होंने लम्बी उम्र पाई थी। तो एक एक्सपर्ट चाहे वह ग़ैर मज़हब का हो इस से भी मश्वरा लिया जा सकता है। आप फिर अपना बयान फ़रमाते हैं कि मैं बीमार था तो अंग्रेज़ डाक्टरों से कुछ मश्वरे ले लेता हूँ मगर उस का मतलब यह नहीं है कि ख़िलाफ़त में भी मैं ने उनसे मश्वरा लिया है या उनसे मश्वरा लेता हूँ या यह कि मैं उन्हें इसी मुक़ाम पर समझता हूँ जिस मुक़ाम पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा रज़ि को समझता हूँ। सहाबा रज़ि से मश्वरा लेता हूँ तो इस का मतलब यह नहीं है कि ग़ैर से मश्वरा लेना और सहाबा से मश्वरा लेना एक बात है। सहाबा रज़ि का मुक़ाम बहरहाल बुलंद है। फ़रमाया बल्कि उस का मतलब सिर्फ यह होता है कि मैं ने तिब्ब मैं मश्वरा लिया। एक ख़ास फ़ील्ड, एक ख़ास विभाग है इस में मश्वरा लिया या किसी ख़ास बात के लिए मश्वरा लिया। अत: कल्पना करो कि साद बिन अबादह रज़ि से किसी दुनया के मामला में जिसमें वह माहिर फन हों मश्वरा लेना साबित भी हो तो यह नहीं कहा जा सकता, तब भी यह नहीं कहा जा सकता कि वे मश्वरों में शामिल होते थे। मगर उन के बारे में तो कोई सही रिवायत ऐसी नहीं जिसमें ज़िक्र आता हो कि वह मश्वरों में शामिल होते थे बल्कि मजमूई तौर पर रिवायतें यही वर्णन करती हैं कि वह मदीना छोड़कर शाम की तरफ़ चले गए थे और सहाबा पर यह असर था कि वह इस्लामी मर्कज़ से अलग हो चुके हैं। इसी लिए उनकी वफ़ात पर सहाबा के बारे में आता है कि उन्होंने कहा कि फ़रिश्तों या जिन्नों ने उन्हें मार दिया जिससे मालूम होता है कि सहाबा के नज़दीक उनकी मौत को भी अच्छे रंग में नहीं समझा गया क्योंकि यूं तो हर एक को फ़रिश्ता ही मारा करता है मगर उनकी वफ़ात पर खासतौर पर कहना कि उन्हें फ़रिश्तों ने या जिन्नों ने मार दिया, बताता है कि उनके नज़दीक वफ़ात ऐसे रंग में हुई कि गोया ख़ुदा तआला ने उन्हें अपने ख़ास कर्म से उठा लिया कि वह फूट का कारण न हूँ अर्थात बहरहाल बदरी सहाबा में से थे तो किसी किस्म के निफ़ाक़ या कोई और मुख़ालिफ़त या और कोई ऐसी बात का कारण न हूँ जिससे फिर उनका वह मुक़ाम गिरता हो लेकिन बहरहाल वह अलग हो गए।

यह वर्णन करने के बाद आप फ़रमाते हैं कि ये समस्त रिवायतें बतलाती हैं कि उनकी वह इज़्ज़त सहाबा रज़ि के दिलों में नहीं रही थी जो उनके इस मुक़ाम के लिहाज़ से होनी चाहिए थे जो कभी उन्होंने हासिल किया था। और यह कि सहाबा रज़ि उनसे ख़ुश नहीं थे वर्ना वे क्योंकर कह सकते थे कि फ़रिश्तों या जिन्नों ने उन्हें मार दिया बल्कि इन शब्दों से भी ज़्यादा सख़्त शब्द उनकी वफ़ात पर कहे गए हैं जिन्हें में अपने मुँह से कहना नहीं चाहता।

अत: यह विचार कि ख़िलाफ़त की बैअत के बिना भी इन्सान इस्लामी निज़ाम में अपने मुक़ाम को क़ायम रख सकता है घटनाओं और इस्लामी शिक्षा के बिलकुल ख़िलाफ़ है और जो शख़्स इस किस्म के विचार अपने दिल में रखता है मैं नहीं समझ सकता कि वह बैअत का मफ़हूम कुछ भी समझता हो

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग16 पृष्ठ 95 से101 ख़ुत्बा जुमा 8 फरवरी 1935 ई)

हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि की वफ़ात हूरान मुल्क सीरिया में हुई। हज़रत उमर रज़ि के ख़लीफ़ा चुने होने के अढ़ाई साल के बाद हुई थी। अल्लामा इब्न हिज्र असकलानी के अनुसार उनकी वफ़ात शाम के शहर बुसरा में हुई थी। यह शाम का पहला शहर था जो मुस्लमानों ने फ़तह किया था। मदीना में उनकी मौत का पता नहीं लगा, फिर किस तरह इलम हुआ ?यह रिवायत आती है यहां मदीना में इस का इलम उस वक़्त हुआ कि जब बेअरे मनब्बिहया सकन के कुँवें थे उनमें दोपहर की सख़्त गर्मी में छलांगें लगाने वाले लड़कों में से एक ने कुँवें में से किसी को यह कहते सुना कि

قَدْ قَتَلْنَا سَيِّدَ الْخَزْرَجِ سَعْدَ بْنَ عُبَادَه
وَرَمَيْنَاهُ بِسَهْمَيْنِ فَلَمْ نُخْطِ فُؤَادَه

कि हमने ख़ज़रज के सरदार सअद बिन अबादह रज़ि को क़तल कर दिया। हम ने उसे दो तीर मारे हम ने उस के दिल पर निशाना लगाने से ख़ता ना किया। लड़के डर गए और लोगों ने इस दिन को याद रखा। लोगों ने उसे वही दिन पाया जिस रोज़ हज़रत सअद रज़ि की वफ़ात हुई थी। सअद रज़ि बैठे पेशाब कर रहे थे कि उन्हें क़तल कर दिया गया और वह उसी वक़्त वफ़ात पा गए। हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि की वफ़ात हज़रत उमर रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में हुई। उनकी वफ़ात के साल में मतभेद है। कुछ रिवायतों के अनुसार14 हिज्री में और कुछ के

अनुसार15 हिज्री में और कुछ के अनुसार वफ़ात16 हिज्री में हुई। हज़रत सअद रज़ि की क़ब्र दमिशक़ के क़रीब निचली तरफ स्थित एक गांव मनीहा में है। तबक़ातुल कुबरा का यह हवाला है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 463 सअद बिन अबादा, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2012ई) (अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्न हिज्र असकलानी भाग 03 पृष्ठ 56 सअद बिन उबादा ,दारुल कुतुब अल्इ-लिमया बेरूत 2005 ई (अल असाबा फ़ी मारफितस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 164 सअद बिन उबादा दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2002 ई)

अब इस के बाद में दो मरहूमीन का ज़िक्र करूँगा जिनका अभी जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा इंशा अल्लाह।

पहले हैं मुकर्रम सय्यद मुहम्मद सरवर शाह साहिब जो सदर अन्जुमन अहमदिया कादियान के मैंबर थे। 8 जनवरी को 85 साल की उम्र में यह वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। पिछले कुछ अर्से से कैंसर के मर्ज़ में पीड़ित थे लेकिन बड़ी हिम्मत से, सब्र से, हौसले से उन्होंने बीमारी का सामना किया और आख़िर तक अपने फ़राइज़े मंसबी उत्तम रंग में अदा करने की कोशिश करते रहे। कभी बीमारी को आड़े नहीं आने दिया। आप गां सूंगड़ा सूबा उडीशा के एक प्रसिद्ध मुख़लिस अहमदी ख़ानदान से सम्बन्ध रखते थे। उनके पड़नाना हज़रत सय्यद अब्दुर्रहीम साहिब रज़ि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और नाना मुकर्रम मौलवी अब्दुल अलीम साहिब मरहूम एक प्रख्यात विद्वान थे और शायर भी थे। और आपके जन्म पर आपके पिता ने अपने ख़ुसर से नाम तजवीज़ करने की दरख़ास्त की तो उन्होंने बताया कि मैंने ख़्वाब में सय्यद सरवर शाह साहिब को देखा है कि हमारे घर आए हैं। इसलिए उस का नाम भी सय्यद सरवर रख लें। आरम्भिक शिक्षा के बाद जो उन्होंने ज़िला कटक में हासिल की बी ए पास किया। फिर प्राईवेट स्कूल में हेडमास्टर हो गए। इस के बाद उडीशा हाईकोर्ट में अस्सिटैंट रहे। फिर ऑडिट ऑफीसर के ओहदे पर फ़ाइज़ रहे और रिटायरमैंट के बाद भी 1995 ई में जमाअत की ख़िदमत के लिए अपने आपको वक़्फ़ किया। हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह राबे ने 1996 ई में कुछ काम उनके सपुर्द किए, उनका इंचार्ज बनाया। उनको उमरा की भी तौफ़ीक़ मिली। मर्कज़ी आडीटर और कई मामलों में वन मैन कमीशन (one man commission)के तौर पर भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने उनको मुक़र्रर फ़रमाया और फिर यह आख़िर तक इसी ऑडिट के ओहदे पर रहे। और मरहूम को नौ साल तक बतौर सदर क़ज़ा बोर्ड ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह कई अहम मर्कज़ी कमेटीयों के सदर और मैंबर भी रहे और वफ़ात तक सदर अंजुमन अहमदिया के मैंबर होने की तौफ़ीक़ पाई। इंतिज़ामी सलाहीयत बड़ी अच्छी थी। लंबा अरसा मर्कज़ी आडीटर के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली जैसा कि मैंने कहा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहिमहुल्लाह ने उनको एक ख़त में फ़रमाया कि आप ख़ूब काम कर रहे हैं। जज़ाकमहुल्लाह अहसनल जज़ा। बिला ख़ौफ़ इज़हारे हकीकत करने की अदा बहुत पसन्द आई है आपकी। माशा अल्लाह बड़े बारीक और अहम पहलूओं पर नज़र जाती है। आप इसी तरह अपने प्रोग्राम के अनुसार अपना काम करते रहें और आपको इस से कोई रोक नहीं सकता अल्लाह आपको सेहत दे और उम्र में बरकत बख़्शे। (इस वक़्त उनकी सेहत और उम्र की दुआ दी।)

कादियान के नाज़िम साहिब दारुल क़ज़ा बयान करते हैं कि क़ज़ा के समस्त काम करने वालों के साथ बहुत मुहब्बत का ताल्लुक़ रहा। बोर्ड में ज़ेरे कार्रवाई मुक़द्दमात में यता सम्भव जल्द फ़ैसला करने की कोशिश करते थे। महोदय बहुत एहतियात के साथ मिसल का जायज़ा लेते थे। इन्साफ़ पर आधारित फ़ैसला करवाने की हर संभव कोशिश करते थे। राय वाले थे और हस्सास मामलों में अल्लाह तआला से रहनुमाई के इच्छुक रहते थे।

डाक्टर तारिक़ साहिब उनके दामाद हैं। नूर हस्पताल कादियान के सीनीयर मैडीकल अफ़्सर हैं। वह कहते हैं कि बाक़ायदगी से तहज्जुद अदा करने के इलावा मस्जिद मुबारक में नमाज़ें बरवक़्त अदा करते थे। हाथ पैर जब लड़खड़ाने लगे, सही तरह चल नहीं सकते थे तो दूसरों के सहारे मस्जिद जाते थे। नमाज़ जुम्अ: में हमेशा वक़्त पर जा कर पहली सफ़ में बैठते थे। नमाज़ मग़रिब से इशा तक मस्जिद में बैठ कर नफ़िलों, दुआओं और तस्बीहों में मशग़ूल रहते थे।

नाज़िर आला कादियान ने भी लिखा है उनकी खूबियां बहुत थीं। बड़ी मिलन-सारी थी। मेहमान नवाज़ी थी। बड़े अनथक मेहनती इन्सान थे। ग़रीबों के हमदर्द थे और अपने उच्च अफ़सरों के बहुत अज्ञा पालन करने वाले और फ़रमांबर्दार थे। ख़िलाफ़त से वाबस्तगी गहरी थी और दूसरों को भी इस की ,ख़िलाफ़त से वाबस्ता रहने की नसीहत किया करते थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मरहूम मूसी थे और मरहूम के सब बेटे बेटियां जमाअत के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। और उनके छोटे बेटे सय्यद महमूद अहमद नूर हस्पताल कादियान में बतौर फार्मासिस्ट (pharmacist)ख़िदमत सरअंजाम दे रहे हैं। उनके दोनों दामाद सय्यद तनवीर अहमद साहिब और डाक्टर तारिक़ अहमद साहिब वाकिफे ज़िन्दगी हैं। कादियान में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। इसी तरह छोटे दामाद जो मुहसिन ख़ान हैं वह भी रिटायरमैंट के बाद जमाअत की ख़िदमत रज़ाकाराना तौर पर कर रहे हैं

जब तक साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब मरहूम नाज़िर आला रहे हमेशा अदब के दायरे में रहते हुए ऑडिट किया और उनसे सम्बन्धचित सवाल किया करते थे। कहा करते थे कि सारे कादियान मैं मियां साहिब जैसा मुहब्बत करने वाला वजूद कोई नहीं था। दारुल मसीह में रहते थे और हज़रत मियां साहिब उनका बड़ा ख़्याल रखा करते थे। कई बार शाह साहिब उनकी मोहब्बतों और शफ़क़तों को याद कर के रो पड़ा करते थे। दरवेशाँने कादियान का बड़ा सम्मान करते थे और ख़ुद भी उन्होंने बड़ी आजिज़ी से और दरवेशी की ज़िन्दगी गुज़ारी। जामिया अहमिदया के छात्रों से बड़ी मुहब्बत का सुलूक था। उल्मा की बड़ी इज़्ज़त फ़रमाया करते थे। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनके नक़्श क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा जो पढ़ा जाएगा वह मुहतरमा शौकत गौहर साहिबा का है जो डाक्टर लतीफ़ अहमद क़ुरैशी साहिब रब्वह की अहलिया थीं और मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहिब मरहूम की बेटी थीं। पाँच जनवरी को रब्वह में उनकी 77 साल की उम्र में वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से आप भी मूसिया थीं। आगरा में यह पैदा हुई थीं और इन दिनों में उनके पिता मौलाना अब्दुल मालिक ख़ान साहिब वहां बतौर मुरब्बी मुतय्यन थे। फिर यह माता पिता के साथ हैदराबाद दक्कन में रहीं। पाकिस्तान बनने के बाद कराची शिफ़्ट हो गए। उन्होंने आरम्भिक शिक्षा कराची में हासिल की और शिक्षा में, पढ़ाई में बहुत होशियार थीं। हमेशा अच्छी पोज़ीशन लिया करती थीं। बड़ी छोटी उम्र से ख़िदमते सिलसिला का उनको शौक़ था। नास्रात की सैक्रेटरी बनी हैं तो वहां कराची की नास्रात को सफ़ अव्वल में ले आईं। फिर उस के बाद जब 1961 में उनका निकाह डाक्टर लतीफ़ क़ुरैशी साहिब के साथ हुआ है तो वह मैडीकल कॉलेज में पढ़ रहे थे। इस के बाद जब वह इंग्लिस्तान आ गए तो यह उनके साथ विदा हो कर यहां आईं। फिर यहां शिक्षा मुकम्मल करने के बाद डाक्टर साहिब ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला को जब लिखा तो उन्होंने आप को कहा कि पाकिस्तान आएं और फ़ज़ले उम्र हस्पताल में उनका तक़र्रुर फ़रमाया। उन्होंने भी अपने पती के साथ बड़ी बशाशत से रब्वह जाकर वहां ख़िदमत शुरू की और ख़िदमत सिलसिला के अवसर भी उनको मयस्सर आए। उन्होंने वहां लजना का बहुत काम किया है और उनके ज़माना में रब्वह का रहने वाला हर शख़्स, हर औरत मेरा ख़्याल है हर बच्ची भी उनकी ख़िदमतों को जानती होगी।

मेरी माता साहबज़ादी नासिरा बेगम साहिबा जब सदर लजना रब्वह थीं तो उन्होंने उनको मज्लिस आमिला में जनरल सैक्रेटरी मुक़र्रर किया था। और पंद्रह साल तक इस काम पर मुतय्यन रहीं। और उन्हीं से उन्होंने ट्रेनिंग ली थी। इस के बाद बड़ी आला इंतिज़ामी सलाहीयत के साथ उन्होंने काम किया। फिर मर्कज़ी आमिला में भी सैक्रेटरी के तौर पर काम किया। फिर उनको मैंने जनरल सैक्रेटरी मर्कज़िया, पा-किस्तान मुक़र्रर किया। छ: साल तक वहां भी उन्होंने बड़ी उच्च ख़िदमतें सरअंजाम दी हैं और अपनी बीमारी की वजह से लजना का काम छोड़ना पड़ा लेकिन फिर भी अवसर मिलता रहता था। किसी ना किसी तरीक़े से ख़िदमत करती रहती थीं। पच्चास साल तक विभिन्न विभागों में उन्होंने ख़िदमते सिलसिला की तौफ़ीक़ पाई है और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

आपके साथ काम करने वाली हर औरत, हर बच्ची आपकी बड़ी तारीफ़ करती है। पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक, ग़रीबों और ज़रूरतमंदों का ख़्याल, मेहमान-नवाज़ी, चंदों की खासतौर पर अदायगी और तवज्जा और पहली फ़ुर्सत में अदा करना यह सब उनकी ख़ासीयत थी। बल्कि वक़्फ़ जदीद की अदायगी का इस साल भी जब ऐलान किया तो उन्होंने उसी वक़्त वफ़ात से कुछ दिन पहले अपना चंदा अदा कर दिया। पाँच को वफ़ात हुई है और 1 को ऐलान हुआ तो फ़ौरन पहले अदा किया।

डाक्टर क़ुरैशी साहिब लिखते हैं कि मरहूमा ने पच्चास साला दौरे रफ़ाक़त में बेहतरीन बीवी, बेहतरीन माँ, बेहतरीन बहन और बेहतरीन बेटी के तौर पर अपने हुक़ूक़ अदा किए। एक चीज़ यहां लिखने वाले ने छोड़ दी है या डाक्टर साहिब ने वर्णन नहीं की कि बेहतरीन बहू भी थीं। शायद ग़लती से रह गया। उनकी सास और सुसर उनके साथ रहे बल्कि अब तक ज़िन्दा हैं और साथ हैं तो उनकी उन्होंने ख़िदमत की। बीमारी में भी ख़िदमत की और माँ की तरह उनको रखा। अत: आप मिसाली ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद इस दुनिया से विदा हुई थीं। बीमारी बहुत लंबी थी उस के बावजूद घर के कामों में दिलचस्पी लेतीं और उनको मुकम्मल करतीं। बीमारी में कभी शिकवा ज़बान पर नहीं आया। बीमारी को सब्र के साथ बर्दाश्त किया। ख़िलाफ़त के साथ गहरा ताल्लुक़ था। उनके पीछे रहने वालों में उनके पती डाक्टर लतीफ़ क़ुरैशी साहिब के इलावा तीन बेटे और दो बेटियां हैं और दो बेटे और एक बेटी डाक्टर हैं। एक बेटा इन्जीनर है। सारे पढ़े लिखे हैं। उनको सख़्त हालात में पढ़ाया और किसी बेटी ने उनको एक बार कहा कि आप कभी ज़ेवर नहीं पहनतीं, कोई अच्छा लिबास नहीं बनातीं तो उन्होंने कहा जो मैं बचत करती हूँ तुम लोगों की शिक्षा पर ख़र्च करती हूँ और यही मैं चाहती हूँ मेरा ज़ेवर और मेरा लिबास यही हो अगर तुम लोग उच्च पढ़ लिख जाओ और जमाअत के लिए भी मुफ़ीद बन जाओ, मुफ़ीद वजूद बनो और अपने आपको भी सँभालने वाले हो।

बड़ी सच्ची रोया देखने वाली थीं, साहबे रोया तथा कशफ़ देखने वाली भी थीं। उनकी कई ख़्वाबें जो उनके बच्चों ने लिखी हैं पूरी हुईं। एक बेटी को दाख़िला के वक़्त बताया कि तुम्हारा अमुक मैडीकल कॉलेज में दाख़िला होगा, मैंने ख़्वाब में देखा है और वहीं उनका दाख़िला हुआ। इसी तरह उनकी और बहुत बेशुमार ख़्वाबें हैं। अल्लाह के फ़ज़ल से बड़ी नेक ख़ातून थीं और अपनी बहनों इत्यादि का ध्यान रखा।

उनके बेटे अब्दुल मालिक ने लिखा है कि जमाअत के लिए निस्वार्थ ख़िदमत करने वाली थीं। कई बार दफ़्तर लजना से दारुल उलूम तक सख़्त गर्मी में पैदल चलती आएं और कभी एक बार भी शिकवा नहीं किया। और ईद के अवसर पर हमेशा क़रीबी और दूर के पड़ोसियों को घर से मीठा बना कर भेजा करती थीं और हमेशा यह कहती थीं कि अगर हम धर्म से जुड़े रहेंगे तो अल्लाह तआला कभी हमें नष्ट नहीं करेगा।

उनकी बेटी कहती हैं कि शादी के बाद जब मेरे बच्चे हुए जो अमरीका में रहते हैं तो मुझे हमेशा नसीहत की कि अमरीका और बाहर के देशों के प्राय बुरे माहौल से बचने के लिए अपने बच्चों से प्यार और दोस्ती का सम्बन्ध रखना। घर का माहौल ऐसा बनाओ कि उनका घर में दिल लगे और बाहर जाने के बजाय वे घर में ज़्यादा वक़्त गुज़ारें।

फिर यह बेटी कहती हैं कि मैडीकल कॉलेज में एक बार लड़कियों ने मेरा विरोध किया। अहमदी होने की वजह से बाईकॉट कर दिया। मैंने अपनी अम्मी को फ़ोन किया और रोने लगी तो उन्होंने बड़े अच्छे अंदाज़ में नसीहत की और फ़रमाया कि इस में रोने की क्या बात है। यह तो अंबिया की सुन्नत है जिस पर तुम्हें चलने का मौक़ा मिल रहा है और यह कहा कि लिख लो कि अगर अहमिदयत की वजह से कोई तकलीफ़ पहुंची तो अल्लाह तआला तुम्हें कभी नष्ट नहीं करेगा और परीक्षा में भी कामयाब होगी। अत: कहती हैं कि मैं परीक्षा में न सिर्फ कामयाब हुई बल्कि वही शरारती लड़कियां सबकी सब फ़ेल भी हो गईं।

अल्लाह तआला मरहूमा के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनके नक़श क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। नेक हूँ। सालिह हों और ख़ादिम दीन हों और ख़िलाफ़त से हमेशा सम्बन्ध रखने वाले, वफ़ा का ताल्लुक़ रखने वाले हों।

जैसा कि मैं ने कहा नमाज़ों के बाद इन दोनों की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 29 नवम्बर 2019 पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

शिक्षा को दुनिया में फैला रहे हैं।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से लेथोनिया में हमारी जमाअत तरक़्क़ी कर रही है। हुज़ूर लेथोनिया कब पधारेंगे? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप पूछ रहे हैं कि कब आएँगे? आप दावत क्यों नहीं देते ? इस पर महोदय ने निवेदन किया कि हम दावत देते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बड़ी धीरे आवाज़ में दावत दी है। इस पर महोदय ने मुस्कुराते हुए बुलंद आवाज़ से कहा हम हुज़ूर अनवर को दावत देते हैं।

लेथोनिया से एक Lawyer कंपनी के सरबराह Sarunas Badauskas (शार्विनस बादावसकस) साहिब भी जलसा में शरीक थे। यह कहते हैं कि जलसा सालाना बहुत महत्तवपूर्ण है क्योंकि इस में इस्लाम की शान्तिप्रिय शिक्षाओं का पता चलता है और इस्लाम के बारे में जो ग़लत विचार हैं उनका खण्डन होता है

Boleslav Ragucki (बोले स्लाव रागोत्सकी) साहिब ने कहा कि इतने अहम और बड़े जलसा में शामिल होने मेरे लिए बहुत ख़ुशी का कारण है। मुझे इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को जानने का अवसर मिला। मैंने बहुत सी अच्छी और हिक्मत वाली बातें सुनें। मुझे यहां का निज़ाम बहुत अच्छा लगा।

एक मेहमान औरत ने निवेदन किया कि हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह की हैसियत से बेहद व्यस्त हैं। हुज़ूर अपनी hobbies के लिए कैसे वक़्त निकालते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया है कि "मेरी hobby जमाअत का काम ही है।

लेथोनिया से Yaqubov Dadojon (यअकोबोव दादूजान) साहिब वर्णन करते हैं कि जलसा के समस्त प्रबन्ध निहायत मुनज़्ज़म तरीक़ से किए गए। रज़ाकारों ने मेहमानों का बहुत ख़्याल रखा। तक़ारीर का स्तर बहुत अच्छा था ख़ासकर मुझे जर्मन तक़रीर बहुत अच्छी लगी जिसमें बहुत सारी नसीहतें की गईं। मेरी इच्छा है कि अहमदिया जमाअत पूरी दुनिया में फैल जाए।

Marija Ragucka (मारीया रागोत्सका) साहिबा ने कहा कि पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुई हूं। बहुत बर्दाश्त का माहौल था। मुझे ख़लीफ़ा से मिलकर बहुत ख़ुशी महसूस हुई। उनकी बातें हिक्मत से भरी थीं। मुलाक़ात के बाद भी मैं इस ख़ुशी को महसूस कर रही हूँ।

एक मेहमान के सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: समस्त धर्मों ख़ुदा की तरफ़ से हैं। ख़ुदा तआला ने समस्त क़ौमों में नबी भिजवाए। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने ख़ुद कहा कि इस्राईल की गुम हुई भेड़ों (lost tribes) के लिए आया हूँ। बाइबल में इस का ज़िक्र है। मसीह अलैहिस्सलाम ने कभी यह नहीं कहा कि वे सारी दुनिया के लिए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम आख़िरी किताब है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सारी दुनिया के लिए आया हूँ। क़ुरआन करीम में इस का ज़िक्र है आप को सारी दुनिया के लिए, समस्त संसार की क़ौमों के लिए मबऊस फ़रमाया गया। और क़ुरआन करीम आख़िरी शरीयत है और क़यामत तक के लिए है। यह हमारा अक़ीदा है कि समस्त नबी ख़ुदा की तरफ़ से आए हैं और विभिन्न क़ौमों और इलाक़ों की तरफ़ मबऊस किए गए जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारी दुनिया के लिए नबी बनाकर भेजा गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम कहता है لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّين कि मज़हब में कोई ज़ोर नहीं है। हर इन्सान मज़हब को धारण करने के लिहाज़ से आज़ाद है। जो नहीं मानते वे भी हमारे दोस्त हैं, इन्सानियत की हैसियत से सब दोस्त हैं। हम तो सबसे मुहब्बत तथा प्यार का सम्बन्ध रखते हैं।

एक सवाल के जवाब में कि अहमदी और बाक़ी मुसलमानों में क्या फ़र्क़ है, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माना में एक रीफ़ारमर आएगा। एक मुस्लेह आएगा जो मसीह और महदी होगा। जमाअत अहमदिया ईमान रखती है कि वह यह मसीह महदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम की सूरत में आ चुका है जबकि दूसरे मुसलमान अभी तक उस का इंतज़ार कर रहे हैं। हम कहते हैं कि ख़ुदा तआला ने आपको भेजा है और आपने जमाअत की बुनियाद रखी जो आज सारी दुनिया में इस्लाम के प्रचार का

काम कर रही है। जबकि दूसरे मुसलमान कहते हैं कि अभी मसीह महदी नहीं आया और तुम आने वाले को नबी मानते हो जबकि हम किसी नबी के आने के क़ाइल नहीं। इस पर हम उनको यह दलील देते हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले का नाम 'नबी उल्लाह रखा है। लेकिन इस के बावजूद दूसरे मुसलमान हमें इस्लाम से बाहर निकालते हैं और काफिर कहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हम कहते हैं कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो की पेशगोई के अनुसार आए और इस्लाम की असल और वास्तविक शिक्षा दुनिया के सामने पेश की और क़ुरआन करीम की शिक्षा पेश की। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं दो उद्देश्य लेकर आया हूँ। एक तो यह कि ख़ुदा तआला का हक़ अदा करो , ख़ुदा तआला को पहचानो और दूसरा यह कि इस के बंदों के अधिकार अदा करो, हर एक दूसरे का हक़ अदा करे। यही इस्लामी शिक्षाओं का सार है

एक मेहमान ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुम्अ: बहुत अर्थपूर्ण था। मैं इस पर हुज़ूर का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

एक दोस्त ने सवाल किया कि ईसाईयों और यहूद के पास तो ten commandments हैं जबकि मुसलमानों के पास क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुसलमानों के पास क़ुरआन करीम की शिक्षा है। हम अहमदी इस पर अनुकरण करते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अहमदियों के लिए दस बैअत की शर्तें रखी हैं। ख़ुदा तआला से लेकर बन्दों के हक़ अदा करने तक सारी बातें उन में आ गई हैं। जो अहमदी बैअत करता है वे इन सब पर अनुकरण करता है।

लेथोनिया से Jeronimas Laucius (यार विनियमस लावतसिस) साहिब ने कहा कि मैं लेखक हूँ और आपकी जमाअत की अमन की कोशिशों को हमेशा अख़बारों और रसालों में लिखता रहूँगा। मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हुआ हूँ और यह जलसा मुझे पिछले जलसा का क्रम ही लगा है। जलसा सालाना निहायत मुफ़ीद प्रोग्राम है क्योंकि इस में वर्तमान समय की समस्याओं के हल के बारे में तक़रीर की जाती हैं, दुनिया में अमन फैलाने का प्रोत्साहन दिया जाता है और जो लोग ईमान से दूर हो जाते हैं उनको ईमान के क़रीब करने के बारे में शिक्षा दी जाती है। मुझे ख़लीफ़ा साहिब की तक़रीर से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला है

लेथोनिया से Henrikas Sargelis (हेनरिक्स सरगेलस) साहिब वर्णन करते हैं कि: पहले मैं इस्लाम के बारे में नकारात्मक सोच रखता था और अब जलसा में शामिल होने के बाद मेरी सोच सकारात्मक हो गई है। मेरे दिल में मुसलमानों के लिए इज़्ज़त के भावनाएं पैदा हो गई हैं। नई मालूमात मिलने के साथ साथ मेरा मज़हब की तरफ़ रुझान भी बढ़ गया है। जलसा के प्रबन्ध निहायत मुनज़्ज़म तौर पर किए गए और समस्त लोग बहुत उत्तम आचरण से पेश आए। ख़लीफ़ा साहिब से मुलाक़ात का तजुर्बा बहुत अच्छा रहा। उन से बहुत सादा और अच्छे अंदाज़ में बातचीत हुई। मेरे दिल में उन के लिए निहायत इज़्ज़त के भावनाओं हैं

लेथोनिया से Danguole Sarapiniene (दांगवा ले सारा पैनी अने) साहिबा ने कहा कि मुझे दूसरी बार जलसा सालाना में शामिल होने का अवसर मिला। बहुत मुनज़्ज़म और ख़ुशगवार माहौल था। ख़लीफ़ा साहिब से मिलकर बहुत ख़ुशी महसूस हुई और उनके साथ तस्वीर बनाने का अवसर भी मिला। जब मेरी बेटी की शादी एक अहमदी मसरूर अहमद क़मर से हुई तो शुरू में मेरे ख़्याल इस्लाम के बारे में नकारात्मक थे। मैंने जब अपने दामाद का बेटी के साथ अच्छा रवैय्या देखा और जब मुझे उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं से आगाह किया तो मुझे इत्मीनान हो गया और मैंने इस्लाम को दूसरे अंदाज़ से देखना शुरू किया। जलसा से मुझे इस्लाम की और अधिक परिचय प्राप्त हुआ है। मैं बहुत ख़ुश हूँ।

लेथोनिया से Danuta Sargeliene (दानवता सार गीली अने) साहिबा ने कहा कि मैं समस्त धर्मों का सम्मान करती हूँ और इसी तरह इस्लाम का भी। जलसा में शामिल करके मेरा इस्लाम के बारे में इल्म बढ़ा है। खासतौर पर मुसलमानों का औरतों से सुलूक बहुत अच्छा है। जलसा निहायत मुनज़्ज़म था। मुझे इख़लास से भरपूर इबादतों को देखकर बहुत अच्छा लगा।

लेथोनिया से Abdussator Boboev (अब्दस्सत्तार बूबवाईव) साहिब ने कहा कि मैंने अहमदियों के बारे में सुना था कि वह मुसलमान नहीं हैं और शराब को जायज़ समझते हैं। जलसा में शामिल होने से पहले अहमदियों की मस्जिद देखी और इस में नमाज़ पढ़ी तो पता चला कि ये लोग मुसलमान हैं और धर्म के पाँच अरकान पर अनुकरण करते हैं। जलसा में शामिल हो कर पता चला कि यह इमाम महदी को मानते हैं और बिलकुल शराब नहीं पीते और हराम से बचते हैं। यहां जलसा में शामिल हो कर अहमदिया जमाअत के बारे में बहुत मालूमात मिली हैं और मैं बुनियादी तौर पर आप लोगों को मुसलमान समझता हूँ। अरकान दीन और अरकान इस्लाम वही हैं जो मुसलमानों के होते हैं। मुझे अब इल्म हुआ है कि आप लोग इमाम अब्बू हनीफा को इमाम समझते हो और उनकी फ़िक़्ह पर अनुकरण करते हो। जलसा में बहुत कुछ अच्छा लगा। यहां पर हज के बाद दूसरी बार इतने मुसलमानों को इकट्ठे होते देखा। ख़लीफ़ा साहिब से मुलाक़ात बहुत अच्छा तजुर्बा था। उनका चेहरा बहुत नूरानी था। जब मैं ताजिकस्तान होता था तो एम टी ए पर उनको देखा करता था और बहुत प्रभावित होता था। वह बहुत नेक हैं।

लेथोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 9 बजकर 20 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के समस्त मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम के अनुसार 10 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

6 जुलाई 2019 ई (दिनांक हफ़्ता)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बज कर पंद्रह मिनट पर जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़जर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। आज प्रोग्राम के अनुसार लजना जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का लज्ना के जलसा से ख़िताब था।

आज लजना के जलसा गाह में सुबह के इज्लास का आरम्भ दस बजे हज़रत बेगम साहिबा मद्दा ज़िल्लाह आली की अध्यक्षता में हुआ जो दोपहर 11 बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। इस सैशन में तिलावत क़ुरआन करीम और इस के उर्दू अनुवाद के इलावा एक उर्दू नज़्म और अरबी क़सीदा और चार तक़रीरें हुईं। जिनमें से तीन उर्दू ज़बान में थीं और एक जर्मन ज़बान में थी

प्रोग्राम के अनुसार दोपहर 12 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लजना जलसा गाह में पधारे। नाज़िमा आला और सदर लजना इमाउल्लाह

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जर्मनी ने अपनी नायब नाज़िमा आला के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया। औरतें ने बड़े जोश और वलवला के साथ नारे लगाए और अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया।

इजलास की कार्रवाई का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया दुर्रे अजम हुबश साहिबा ने की। इस के बाद उस का उर्दू और जर्मन ज़बान में अनुवाद पेश किया इसके बाद प्रिया आईशा सुन्दुस साहिबा ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंजूम कलाम

एक न इक दिन पेश होगा तो फ़ना के सामने
चल नहीं सकती किसी की कुछ क़ज़ा के सामने

अच्छा आवाज़ से पेश किया।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तालीमी मैदान में नुमायां कामयाबी प्राप्त करने वाली 47 छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान फ़रमाए और हज़रत बेगम साहिबा मद्दा ज़िलहा आली ने इन छात्राओं को मैडल पहनाए। तालीमी ऐवार्ड प्राप्त करने वाली इन ख़ुशनसीब छात्राओं के नाम निम्नलिखित हैं

शबाना अहमद(जर्मनी) Consultant as General Practitioner
राहतुल इस्लाम(जर्मनी) PhD in Dentistry
फ़ाइज़ा नियाज़ी चौधरी(जर्मनी) 2nd State Exmaination in Teaching
नाइला जावेद (जर्मनी) State Examination in Human Medicine
दर अजब हवेश (जर्मनी) 2nd State Exmaination in Teaching
मारिया अब्बास(जर्मनी) 2nd State Exmaination in Teaching
मुसव्विरा सबाहत भट्टी(जर्मनी) 2nd State Exmaination in Teaching
हुदा ज़ेरवी (जर्मनी) 1st State Exmaination in Teaching
Zonara Ullah Wahla (जर्मनी) 1st State Exmaination in Teaching
सालहा सबाहत मीर(जर्मनी) Magister Artium in Literature
नायाब मुबश्शिर गोन्दल (जर्मनी) Master of Arts in Sociology
ताहिरा अल्लाह(जर्मनी) Master of Science in Geography
मेहवश अहमद अनवर(जर्मनी) Master of Science in Cell and Molecular Biology
अनीला अहमद (जर्मनी) Master of Arts in Islamic Studies
अदीला सना(जर्मनी) Master of Science Molecular Medicine
मेहवश इफ़्तिख़ार (जर्मनी) Master of Science in Life and Medical Science
फ़रेहा नासिर बट(जर्मनी) Master of Laws in Economic Law
नूरयता अन्जुम (जर्मनी) Master in Engineering in Civil Engineering
अनेज़ा हयात (जर्मनी) Master of Science in Industrial Engineering
ज़ोफ़ेशान मलिक (जर्मनी) Master of Science in Economic Pedagogy
हिबतुल हबीब नासिर (जर्मनी) Master of Arts in Leadership in the creative Industries
सय्यद सबाहुन्नूर शूल्त्स (जर्मनी) Diploma in Personal Specialist
ज़ोहा बाबर(जर्मनी) Bachelor of Arts inInternational Business Management
ताबिंदा ख़ान (जर्मनी) Bachelor of Arts in Social Work
अनअम बेग (जर्मनी) Bachelor of Arts in Educational Science
सना हीवबश (जर्मनी) Bachelor of Arts in Sociology
वफ़ा नासिर बट (जर्मनी) Bachelor of Arts in Architecture
अनीला रज़ा अहमद (जर्मनी) Bachelor of Arts in Psychology & Philology
नदाराना अब्बासी (जर्मनी) Bachelor of Arts in Social Work
साइमा मलिक (जर्मनी) Bachelor of Arts in Educational Scinece
हिबा पाक तुर्क (जर्मनी) Bachelor of Arts in Islamic Science
काशिफ़ा बट (जर्मनी) Bachelor of Arts in International Management
ताबिंदा मन्सूर लोन (जर्मनी) Bachelor of Arts in History
निदा अहमद हीवबश (जर्मनी) Bachelor of Science in History
आलीया यूसुफ़ (जर्मनी) A - Levels
अमतुल रफ़ीक (स्वीटरज़रलैंड) Bachelor of Law in Economics
आईशा सनदास (जर्मनी) BS Electrical Engineering in Electrical Engineering
ज़ाइरा जब्बार(जर्मनी) Bachelor of Engineering in Electrical Engineering
रोमाना कंवल (जर्मनी) M.Sc. Honours in Food Technology
बारीरा ताहिर(जर्मनी) BS Hons in Psychology
फ़ैज़ाना नईम (पाकिस्तान) BS Software Engineering in Software Engineering
सबा अहमद(पाकिस्तान) BS Hons in Statistics
अतीयतुल हबीब (जर्मनी) Bachelor in Business Adminstration
राज़ीया हमीद(कैनेडा)
Nawaziest Ul Bushra(पाकिस्तान) O - Level
लाइलान अहमद ख़ालिद (पाकिस्तान) O - Level
मरहूमा सादिया फ़ाखिरा (पाकिस्तान) MA in Mass Communication
(इन का ऐवार्ड उनके पिता साहिब ने मर्दाना जलसा गाह में वसूल किया था

ऐवार्ड की तक़सीम के बाद बारह बजकर तीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने ख़िताब फ़रमाया

ख़िताब सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूरह की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सूरत अन्नहल की आयत 98 और सूरत अत्तौबा की आयत 112 की तिलावत फ़रमाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

ये आयतें जो मैंने तिलावत की हैं उनमें पहली आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जो कोई मोमिन होने की हालत में नेक और मुनासिब हाल कर्म करेगा,मर्द हो कि औरत, हम उसे यक़ीनन एक पाकीज़ा ज़िन्दगी प्रदान करेंगे और हम इन समस्त लोगों को उनके बेहतरीन कर्म के अनुसार उनके समस्त नेक कर्मों का बदला देंगे

अतः यह है ख़ुदा तआला का इन्साफ़ कि मर्दों औरतों दोनों को उनके कर्म का

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

बदला देता है। कुछ बातें मर्दों के लिए फ़र्ज़ हैं या उनके हालात के अनुसार ज़रूरी हैं और औरत के लिए इस तरह फ़र्ज़ और ज़रूरी नहीं हैं। अल्लाह तआला ने हमें हमारे कर्तव्य और डयूटियों की सूचि भी बता दी है कि इस्लामी समाज में औरत के क्या कर्तव्य हैं और मर्द के क्या कर्तव्य हैं। उनकी एक लम्बी सूचि है वह तो मैं इस वक़्त वर्णन नहीं कर सकता। उदाहरण देता हूँ, जैसे नमाज़ को ही ले लें। मर्दों पर ये फ़र्ज़ किया गया है कि वे सिवाए बहुत मजबूरी के नमाज़ बाजमाअत मस्जिद में जा कर अदा करें जबकि औरत के लिए यह ज़रूरी नहीं। यहां तक कि जुम्अ: भी औरत के लिए इस तरह फ़र्ज़ नहीं है जिस तरह मर्द के लिए फ़र्ज़ है। मर्द को यह कहा गया है कि अगर तुम बाजमाअत नमाज़ पढ़ो तो तुम्हें उस का सत्ताईस गुना सवाब मिलेगा। तो क्या औरत बाजमाअत नमाज़ ना पढ़ कर सत्ताईस गुना सवाब से वंचित रहेगी या उस को इसलिए नमाज़ बाजमाअत पढ़ना ज़रूरी क़रार नहीं दिया गया कि उसे कहीं सत्ताईस गुना सवाब न मिल जाए और उसे वंचित रखा जाए। नहीं। बल्कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हर एक के उचित कर्म हैं, अगर वे इन कर्मों को सरअंजाम दे रहा है , चाहे वह मर्द है या औरत है तो उसे सवाब मिलेगा। औरत का घर में नमाज़ पढ़ना और अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियाँ अदा करना ही उसे मर्द के बराबर सवाब का अधिकारी क़रार दे देगा। तभी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर एक औरत को फ़रमाया था कि तुम्हारा अपने घरों को सँभालना और बच्चों की तर्बीयत करना तुम्हें इतना ही सवाब का मुस्तहिक़ क़रार देगा या बनाएगा जिसका एक मर्द इस्लाम के रास्ते में जान तथा माल का जिहाद कर के अधिकारी होता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: अगर औरत अपने ज़िम्मा काम को सरअंजाम दे रही है और मर्द अपने ज़िम्मा काम और कर्तव्य को सरअंजाम दे रहा है और दोनों अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और ख़शीयत और इस की रज़ा प्राप्त करने के लिए काम कर रहे हैं तो उनकी इस दुनिया की ज़िन्दगी भी पाकीज़ा होगी और अल्लाह तआला के हुक्म पर चलते हुए उसकी रज़ा को प्राप्त करने वाली होगी और आख़िरत में भी उनके कर्म के अनुसार उन्हें बदला दिया जाएगा। अत: जहां इस आयत में इस्लाम ने मर्द और औरत दोनों के अधिकार को स्वीकार किया है और औरत और मर्द को यह कहा गया है कि तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार बदला दिया जाएगा, वहां इस तरफ़ भी ध्यान दिलाया है कि अपनी हालतों और अपने कर्मों को ख़ुदा तआला की शिक्षा के अनुसार ढालो। अल्लाह तआला की ख़शीयत और उसकी प्रसन्नता और उसकी रज़ा प्राप्त करने के लिए अपने कर्म करो। अपनी ज़िम्मेदारीयों को समझो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस आयत में इन लोगों के एतराज़ को भी नकार दिया गया है जो यह कहते हैं कि इस्लाम औरतों के अधिकार का ध्यान नहीं करता। इस्लाम न सिर्फ नेक कर्म करने वाली औरतों को चाहे बज़ाहिर उस के कर्म मर्द की तुलना में कम मेहनत वाले और कष्ट वाले वाले नज़र आते हूँ इस दुनिया में अल्लाह तआला की प्रसन्नता की ख़बर देकर अल्लाह तआला उसे अपने इनामों से नवाज़ने का ऐलान करता है बल्कि यही नहीं, अपनी ज़िम्मेदारियाँ अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अदा करने पर मरने के बाद भी बेहतरीन बदला का ऐलान करता है। अत: ये उन लोगों की जहालत है जो इस्लाम पर यह आरोप लगाते हैं कि मर्द और औरत के बराबरी के अधिकार नहीं हैं और उन लोगों की इन ग़ैर मुस्लिमों से बढ़कर जहालत है जो इस दुनियावी तौर पर तरक़्क़ी वाले समाज की तथाकथित आज़ादी से प्रभावित हो कर किसी भी किस्म के एहसास कमतरी में पीड़ित हो कर इस्लाम की सच्चाई और इस्लाम में अपने अधिकार के बारे में सोच में पड़ जाते हैं या कहना चाहिए कि औरतें और पढ़ी लिखी नौजवान लड़कियां और लड़के ,खासतौर पर लड़कियों की बात कर रहा हूँ,कि इस सोच में पड़ जाते हैं कि इस्लाम ने हमें हमारे अधिकार दिए भी हैं या नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: अपनों या ग़ैरों के जिसके ज़ेहन में भी ये सवाल उठता है कि इस्लाम में औरत के अधिकार नहीं उस को इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा का इल्म ही नहीं। आज हर अहमदी का काम है कि दुनिया को बताए कि धर्म क्या है? हमारे अधिकार क्या हैं और हमारी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं? नबी दुनिया में बंदे को ख़ुदा के क़रीब करने के लिए आते हैं और मज़हब इस दुनिया की ज़िन्दगी और मरने के बाद की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी की बात करता है और एक दुनियादार सिर्फ इस दुनिया की ज़िन्दगी को ही अपना ज़िन्दगी का लक्ष्य समझता है। अत: यह बात हर अहमदी मर्द और औरत और लड़के और लड़की को अपने सामने रखनी चाहिए कि इस्लाम जो सम्पूर्ण और मुकम्मल शरीयत है जिसमें मर्द और औरत हर एक के अधिकार और कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों की वज़ाहत कर दी गई है और उन पर अनुकरण कर के हमने अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त करनी है उसे हमने अपनी ज़िन्दगियों पर लागू करना है और ग़ैर मज़हबी लोगों या दुनियादार लोगों से प्रभावित नहीं होना और न सिर्फ प्रभावित नहीं होना बल्कि उनको मज़हब की हक़ीक़त बितानी है, उनको ख़ुदा तआला के क़रीब लाना है, उनको उनकी जाहिलाना सोचूं की निशानदेही कर के बताना है कि हम जो अहमदी मुसलमान हैं ठीक हैं और हमारा जो मज़हब के बारे में, ख़ुदा तआला के बारे में दृष्टिकोण है वह ठीक है और तुम ग़लत हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: इस सोच के साथ हम में से हर एक ने अपनी अपनी ज़िन्दगी गुज़ारनी है। अपने आपको ख़ुदा तआला के आदेशों का पाबन्द करना है और दुनिया को भी इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा का क़ाइल करना है। जब यह होगा तभी हम वास्तविक अहमदी कहला सकेंगे तभी हमारे यह जलसे आयोजित करने का फ़ायदा है। हर साल आप इज्तिमा कर लें , तर्बीयती क्लासें आयोजित कर लें, जलसे आयोजित कर लें और इस बात पर ख़ुश हो जाएं कि हमारी इतनी हाज़िरी है और ख़लीफ़ा वक़्त ने हम से ख़िताब किया है तो इस का कोई फ़ायदा नहीं है। वक़्ती जोश बेफ़ाइदा है। कुछ वाक्य मुक़र्ररीन के यहां तक़रीरें करने वालों के भी आपको वक़्ती तौर पर भावनात्मक कर देते हैं। जब तक एक लगन और कोशिश के साथ इन नेक बातों को अपनी ज़िन्दगियों का हिस्सा ना बनाएँ, तो वक़्ती तौर पर भावनात्मक होना यह बेफ़ाइदा चीज़ है। हमेशा याद रखें कि आपका इल्म, आपकी अक़ल, आपकी रोशन दिमाग़ी सब बेफ़ाइदा हैं अगर आप अल्लाह तआला की बातों को नहीं समझतीं या समझने की कोशिश नहीं करतीं या सुनकर,समझ कर, फिर इस पर अनुकरण करने की कोशिश नहीं करतीं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: नेक कर्मों के लिए जहां उन जलसों में वर्णन की गई बातों से फ़ायदा उठाएं वहां अल्लाह तआला की बातों की तलाश कर के उन पर अनुकरण करने की कोशिश करें तभी इन जलसों और उन कार्यवाईयों का फ़ायदा है। जैसा कि आयत के हवाले से मैंने ज़िक्र किया था। अल्लाह तआला ने मोमिन मर्दों और औरतों के नेक कर्म पर जज़ा देने का कहा है और दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने जज़ा की बशारत पाने वालों के कुछ कर्मों का ज़िक्र किया है जैसा कि फ़रमाता है कि जो लोग तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, ख़ुदा की प्रशंसा करने वाले हैं ,ख़ुदा की राह में सफ़र करने वाले हैं, रुकऊ करने वाले हैं, सिज्दा करने वाले हैं, नेक बातों का हुक्म देने वाले हैं, बुरी बातों से रोकने वाले हैं और अल्लाह तआला की हदूद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं ऐसे मोमिनों को तो बिशारत दे दे। यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाया। जब अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि बश्शेरलि मोमेनीन तो इस बिशारत में मर्द और औरत दोनों शामिल हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 20 February 2020 Issue No.8

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह लिखा है कि तौबा की क़ुव्वत प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला ने इस्तिग़फ़ार की तरफ़ हमें तवज्जा दिलाई है। अगर इन गुनाहों से बचना है अपने आपको महफ़ूज़ रखना है तो स्थायी इस्तिग़फ़ार करते रहो। यह मेरे शब्द हैं। आप अलैहिस्सलाम की बातों का मफ़हूम यही है। फिर आप अलैहिस्सलाम ने लिखा कि कुछ वक़्त इन्सान नहीं जानता और एक बार ही ज़ंग और अन्धेरा उस के क़लब पर आ जाता है। इस के लिए इस्तिग़फ़ार है कि वह ज़ंग और अन्धेरा न आए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया के शुग़्लों, उस के कामों, उस के खेल कूद और व्यर्थ बातों में आजकल इतनी ज़्यादा attraction है और इन्सान का दिल इस हद तक उसकी तरफ़ माइल होने की कोशिश करता है कि दिल पर ज़ंग लग ही जाता है। जो चमक धर्म की रोशनी की सफ़ाई और सुथराई की और दल के मुसफ़्फ़ा होने की है वह मांद पड़ जाती है और दुनिया की जो रंगीनियाँ हैं वह ग़ालिब आ जाती हैं और यह जो दुनिया की रंगीनियाँ हैं यही ज़ंग हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: अगर हमने अपनी दुनिया तथा आख़रत संवारनी है और दरुस्त रखनी है तो एक मोमिन के लिए निरन्तर इस्तिग़फ़ार ज़रूरी है और सच्ची तौबा के लिए मेहनत ज़रूरी है। अत: हमें इस तरफ़ बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है। ज़ंग को दूर करने और अंधेरों को मिटाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ एक ख़ास कोशिश से क़दम बढ़ाने की ज़रूरत है और यह सब कुछ अल्लाह तआला के फ़ज़ल के बिना नहीं होता। इसलिए अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब करने के लिए इस्तिग़फ़ार के साथ अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ के अनुसार इबादत भी ज़रूरी है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तौबा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाने के बाद इस आयत में अल्लाह तआला ने हमें इबादत की तरफ़ तवज्जा दिलाई है कि इबादत करने वालों को बिशारत है। इबादत के जो तरीक़े ख़ुदा तआला ने हमें बताए हैं उनमें सबसे अहम नमाज़ है। औरत घर की निगरान होने के लिहाज़ से अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त के साथ साथ अपने बच्चों की नमाज़ों की भी हिफ़ाज़त की निगरान है और इस को करनी चाहिए। औरतों में , माताओं में नमाज़ों की आदत हो, उस का एहतिमाम हो तो बच्चों को बचपन से ही नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा दिलाने वाली ये चीज़ होती है और प्राय ऐसी माताओं के बच्चे नमाज़ी होते हैं और ऐसी औरतें और ऐसी माएं ऐसे बच्चों को प्रवान चढ़ा रही होती हैं जो अल्लाह तआला के इरशाद के अनुसार अपने पैदाइशके उद्देश्य को समझने वाले हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अच्छी तर्बीयत करने वाली माएं, बच्चों को इबादत करने वाला बनाने की कोशिश करने वाली माएं कम से कम अपनी इस कोशिश की वजह से जो वे बच्चों को ख़ुदा तआला के क़रीब करने के लिए करती हैं अल्लाह तआला की तरफ़ से बिशारत प्राप्त करने वाली बन जाएँगी और यह भी देखने में आया है कि बापों के कर्मों की वजह से बिगड़ने वाले बच्चे एक वक़्त में माताओं की दुआओं और तर्बीयत की वजह से अल्लाह तआला की तरफ़ आने वाले बन जाते हैं, नेकियों के रास्ते की तरफ़ चल पड़ते हैं। अत: बेशक कुछ माताओं के लिए बच्चों और खासतौर पर लड़कों की तर्बीयत एक ख़ास उम्र के बाद बहुत बड़ा चैलेंज बन जाती है लेकिन माताओं को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और फिर खासतौर पर लड़कियां तो प्राय माताओं के प्रभाव के अधीन होती हैं अगर लड़कियां बिगड़ रही हैं तो ये तो विशेष रूप से माओं का क़सूर है। अगर लड़कियां आज़ादी की तरफ़ जा रही हैं तो यह तो विशेष रूप से माओं का क़सूर है। अगर लड़कियां यूनीवर्सिटियों में जा कर ग़लत किस्म की दोस्तियाँ लगानी शुरू कर देती हैं तो माओं को फ़िक्र करनी चाहिए और दुआएं ज़्यादा करनी चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मोमिन की यह भी निशानी है कि वह प्रशंसा करने वाला है।

पृष्ठ 1 का शेष

और ग़ौर से अध्ययन किया है कि कुछ सख़ावत तो करते हैं लेकिन साथ ही ग़ुस्सा वाले और दुख देने वाले हैं। कुछ हलीम (दयालु) तो हैं लेकिन बख़ील (कन्जूस) हैं , कुछ ग़ज़ब (क्रोध) और तैश(ग़ुस्सा) की हालत में डंडे मार मार कर घायल कर देते हैं मगर तवाज़ो (विनय) और इन्किसार (विनम्रता) नाम को नहीं। कुछ को देखा है कि तवाज़ो और इन्किसार तो उनमें उत्तम स्तर का है मगर शुजाअत (बहादुरी) नहीं है। यहां तक कि ताऊन और हैज़ा का नाम भी सुन लें तो दस्त लग जाते हैं। मैं यह ख़्याल नहीं करता कि जो ऐसे तौर पर शुजाअत नहीं करता उस का ईमान नहीं। सहाबा किराम रज़ि में भी कुछ ऐसे थे कि उनको लड़ाई की क़ुव्वत और जांच ना थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको अलग रखते थे। ये अख़लाक़ बहुत हैं। मैंने जलसा मज़ाहिब की तक़रीर में इन सबको स्पष्ट रूप से और विस्तृत वर्णन किया है। हर इन्सान सारे गुणों को धारण करने वाला भी नहीं और बिलकुल महरूम भी नहीं है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 112 से 114)

☆ ☆ ☆

अल्लाह तआला की प्रशंसा यह तक़ाज़ा करती है कि उसकी नेअमतों की शुक्रगुज़ार बनें। अल्लाह तआला ने जो बेहतर हालात और माली बेहतरी मुहय्या फ़रमाई है इस का शुक्र अदा करें। जब वास्तविक प्रशंसा की तरफ़ तवज्जा पैदा होगी तो यह विचार दिल में मज़बूत होगा कि प्रशंसा के योग्य सिर्फ और सिर्फ ख़ुदा तआला की ज़ात है और मेरे हालात की बेहतरी अगर हो सकती है तो ख़ुदा तआला के साथ जुड़े रहने से हो सकती है और हुई है और अगर कभी मुश्किलों और तंगियों का सामना करना भी पड़े तो अल्लाह तआला की प्रशंसा में तब भी कमी नहीं होनी चाहिए। अल्लाह तआला की प्रशंसा में कमी नाशुक्री की तरफ़ ले जाती है और नाशुक्री ख़ुदा तआला से दूर ले जाती है। अत: हर एक को अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बंदा बनते हुए उसकी प्रशंसा की तरफ़ ध्यान रखना चाहिए

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर एक ख़ुसूसीयत यहां मोमिन की यह बताई गई कि वह अल्लाह तआला की राह में सफ़र करने वाले हैं। आप में से प्राय जो यहां आई हैं या मर्द हैं जो यहां आए हैं वे इसलिए आए हैं कि उनके देश में उन पर हालात तंग किए गए और हिजरत करनी पड़ी और उन देशों में पनाह लेनी पड़ी। अत: इस लिहाज़ से आपके सफ़र भी ख़ुदा की राह में सफ़र हैं। अपने धर्म को बचाने के लिए हैं या आपने धर्म की वजह से ज़िन्दगियों को बचाने के लिए यह सफ़र किए हैं। अधिकतरता ऐसे लोगों की है जिनमें कोई ऐसी क़ाबिलीयत नहीं है जिसकी वजह से वे कह सकें कि हम इन देशों में आए हैं और अपनी किसी योग्यता की वजह से हमारी हिजरत है। अत: जब हिजरत इस नाम पर की है कि हमें मज़हबी आज़ादी प्राप्त हो और हम ख़ुदा तआला का हक़ अदा कर सकें तो फिर ख़ुदा तआला की बातों को मानना भी ज़रूरी है और यहां आकर जो माली बेहतरी और सामान की कशादगी पैदा हुई है वुसअत पैदा हुई है वह और अधिक इस बात की मांग करती है कि अल्लाह तआला के हुक्मों पर अनुकरण करने वाली बनीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आख़िर पर फ़रमाया: अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अल्लाह तआला और इस के रसूल की बातों को समझने वाले हों ,इस पर अनुकरण करने वाले हों, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों, इस दुनिया की लग़वयात और बेहूदगियों से बचने वाले हों और अपनी नस्लों को बचाने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान कर जो हमने वादा किया है इस वादा को पूरा करने वाले हों अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(शेष.....)

☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad